CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुगीता गुरु स्तवराज गुर्वच्छकञ्च

(गुरुगीता–गुरु स्तवराज गुरु अष्टक का हिन्दी अनुवाद)

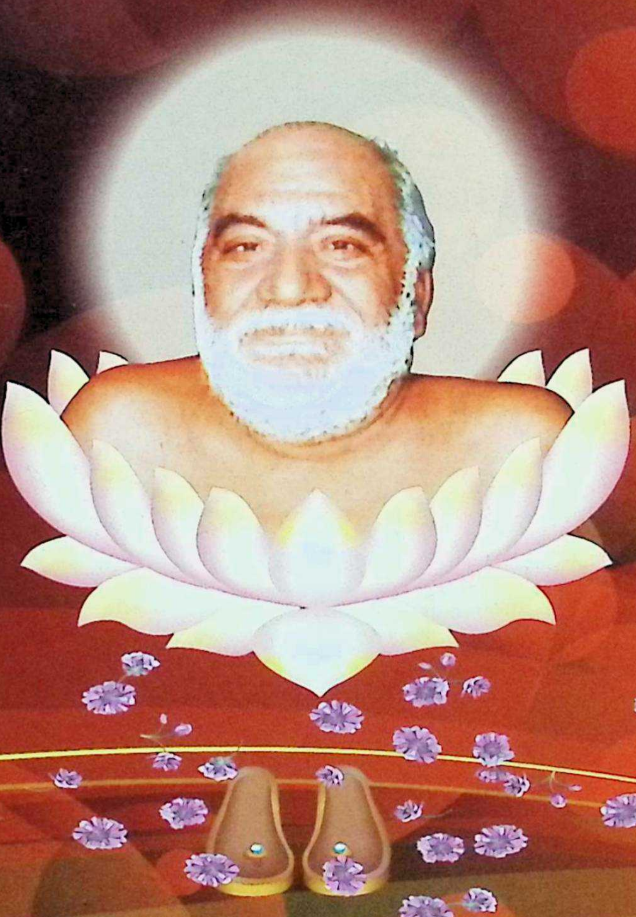

साधौ गुरु समान कोऊ नाहीं
यद्यपि मातु पितु सब कुछ है, जो जन्मे जग माही
पर गुरु बिनु इन्हकी भी महिमा को जाने जग मांही

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुगीता - गुरु स्तवराज गुर्वच्चष्टकञ्च

(गुरुगीता - गुरु स्तवराज, गुरु अष्टक का हिन्दी अनुवाद)

अनुवादक :

डॉ. मोतीलाल खड्डर शास्त्री

एम.ए. (अंग्रेजी), एम.ए. (संस्कृत) पीएच.डी. (तंत्रशास्त्र)

प्रकाशकः

श्री पीताम्बरा पीठ, दतिया (म0प्र0)

Ph. : 07522 - 233960, 234960

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकाशकः
श्री पीताम्बरा पीठ, दतिया (म0प्र0)

प्रथम संस्करण - 1000 प्रतियाँ
सम्वत् - 2075 (सन् 2019)
(सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन)
ISBN No : 978-93-85305-40-5

मूल्य : 15/- रुपये मात्र

मुद्रक :
स्वाधीन ऑफसेट
फ्रैन्ड्स कालौनी, एल्पाईन स्कूल के पास,
ग्वालियर रोड, झाँसी (उ0प्र0)
मो0-9839784150

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषयानुक्रमणिका

अनुक्रमांक	विषय	पृष्ठ क्रं.
1.	समर्पण - लेखक	1
2.	चित्र स्वामी जी महाराज ध्यान सहित	2
3.	चित्र जगतजननी पीताम्बरा माता ध्यान सहित	3
4.	विमोचन - ग्रन्थ विमोचन अनन्त श्रीविभूषित ज्योतिष्पीठाधीश्वर एवं द्वारका शारदा पीठाधीश्वर जगद्गुरु स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती महाराज द्वारा दिनांक 9 अगस्त 2019 भृगुवार को कोलकाता में ग्रन्थ विमोचन किया गया।	4
5.	चित्र में अनन्त श्रीविभूषित ज्योतिष्पीठाधीश्वर एवं द्वारका शारदा पीठाधीश्वर जगद्गुरु स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती महाराज ग्रन्थ विमोचन करते हुये।	5
6.	आशीर्वाद - ज्योतिर्मठ अवांतर भानपुरा पीठ जगद्गुरु शङ्कराचार्य मठ भानपुरा पो. भानपुरा जिला-मन्दसौर, पिन-453775 (म.प्र.)	6
7.	प्रस्तावना - आचार्य ओमनारायण शास्त्री (श्री पीताम्बरा पीठ दतिया)	7-8
8.	प्रकाशकीय - श्री हरिराम सांवला (न्यासी/कोषाध्यक्ष) पीताम्बरा पीठ दतिया	9-10
9.	दो शब्द - डॉ. मोलीलाल खड्डर शास्त्री (मास्टर जी) लेखक	11-12
10.	शुभकामना - 1. नरेन्द्र पंजवानी (ज्योतिषाचार्य आगरा)	13
	2. डॉ. एस.पी. मिश्र	14
11.	गुरु गीता	15-50
12.	गुरुस्तवराज	51-55
13.	गुरुरष्टक	56-58
14.	आरती (भगवती पीताम्बरा माता)	59-61
15.	क्षमापन स्तोत्र	62-67

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुगीता – गुरु स्तवराज गुर्वच्चष्टकञ्च

(गुरुगीता – गुरु स्तवराज, गुरु अष्टक का हिन्दी अनुवाद)

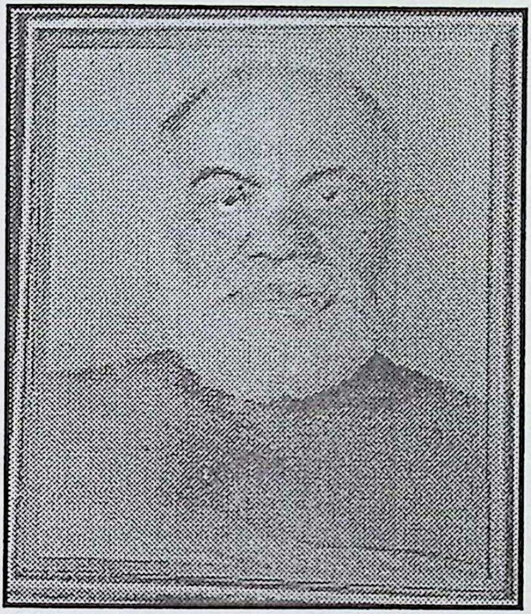

अनंतश्री विभूषित दतिया पीताम्बरा पीठाधी श्वर राष्ट्रगुरु श्री स्वामी जी महाराज

साधौ गुरु समान कोऊ नाहीं
यद्यपि मातु पितु सब कुछ है, जो जन्मे जग माही
पर गुरु बिनु इन्हकी भी महिमा को जाने जग मांही

समर्पणम्

स्वामिनैः राष्ट्रगुरुवर्यैः श्री पीताम्बरा पीठाधीश्वरैः
शाब्दे चक्रे निगदितं सद्गुरुं प्रणमाम्यहम्
गुरुगीता गुरोर्ष्टक गुरु स्तवराजानां हिन्द्यानुवादः
सर्वमेतत् गुरुपादपद्मेषु समर्पयामि॥

अनुवादकः
(मास्टर जी)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनंतश्री विभूषित दतिया पीताम्बरा पीठाधीश्वर
राष्ट्रगुरु श्री स्वामी जी महाराज

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जगतजननी श्री पीताम्बरा माता

ध्यानम्

सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लसिनीम्

हेमाभाङ्गरुचिं शशांक मुकुटां सच्चम्पकस्रग्युताम्।

हस्तैर्मुद्गर पाश वज्र रसना: संविभ्रतीं भूषणैः,

व्याप्तांगीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत्।।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनन्तश्रीविभूषित ज्योतिष्पीठाधीश्वर एवं
द्वारकाशारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

ज्योतिर्मठ
तोटकाचार्य गुफा, चमोली, गढ़वाल (उत्तराखण्ड)
दूरभाष : ०१३८९-२२२१८५

श्रीशारदापीठम्
द्वारका-३६१३३५, देवभूमि द्वारका (गुजरात)
दूरभाष : ०२८९२-२३४०६४

www.jagadgurushankaracharya.org

क्रमांक :

दिनांक : 09 अगस्त 2019

स्थल : अलिपुर, कोलकाता

।। शुभाशंसनम् ।।

स्वस्तिश्री मोतीलाल खड्डर जी ,

नारायणस्मरण-पूर्वक शुभाशीर्वादाः ।

पीताम्बरा पीठ दतिया के स्वामी जी की पावन स्मृति में मोतीलाल खड्डर जी ने विभिन्न ग्रन्थों से गुरु महिमा के श्लोकों को संकलन किया है एवं गुरुगीता का भी इसमें समावेश किया है । गुरुतत्त्व पर भारतीय संस्कृति ने जो दृष्टिपात किया है वैसा अन्यत्र कहीं भी नहीं । भारतभूमि इसीलिए गुरुभूमि मानी जाती है यहाँ गुरुता भूमि में है । श्रीमद्भागवत में कहा है -

आचार्यं मां विजानीयान्नावमन्येत कर्हिचित् । न मर्त्यबुद्ध्याऽसूयेत सर्वदेवमयोगुरुः ।।

अर्थात् ब्रह्मरूप से स्वयं कृष्ण कह रहे हैं गुरु सर्वदेवमय हैं । अस्तु । पीताम्बरा पीठ के स्वामी जी भारत की संत परम्परा के दैदीप्यमान नक्षत्र की भाँति थे । उनके कारण ही दतिया को एक विशिष्ट पहचान मिली । वे उच्च कोटि के साधक थे, हमने उनके साथ शास्त्रचर्चा-पूर्वक बहुत समय व्यतीत किया है ।

उनकी स्मृति में गुरुगीता गुरुस्तवराज एवं गुर्वष्टकम् का प्रकाशन किया जा रहा है । ग्रन्थ की निर्विघ्न सफलता के लिए भगवान् चन्द्रमौलीश्वर से प्रार्थनापूर्वक हमारे भूरिशः शुभाशीर्वाद प्रेषित हैं ।

शुभैषी

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती
जगद्गुरु शङ्कराचार्य
ज्योतिष्पीठ एवं शारदापीठ, द्वारका

०९/०८/२०१९
श्रावण शु.९/ २०७६ वि.
५/१ बी. बेलवेडियर रोड,
अलिपुर, कोलकाता (प.बं.)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

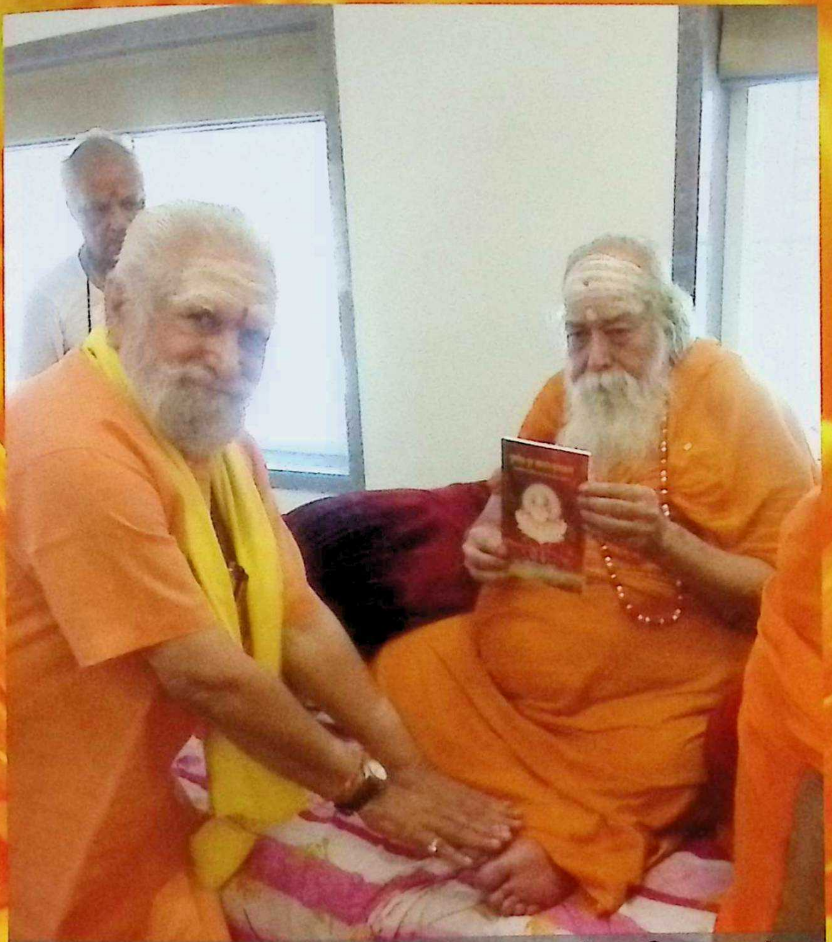

पूज्यपाद अनन्त श्री विभूषित ज्योतिष्पीठाधीश्वर एवं
द्वारका शारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी
श्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज के
70वें भव्य चातुर्मास समारोह कोलकाता में
उनके कर कमलों द्वारा
आज दिनाँक 09 अगस्त 2019 को मास्टर जी
दतिया (म.प्र.) द्वारा संकलित गुरुगीता, गुरुस्तवराज
एवं गुरुअष्टक के श्लोकों का
भाषानुवाद-पुस्तक का विमोचन किया गया।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्योतिर्मठ अवान्तर भानपुरा पीठ जगद्गुरु शङ्कराचार्य मठ
भानपुरा पो. भानपुरा जिला-मन्दसौर पिन-458775 (म.प्र.)

स्वस्ति डॉ. मोतीलाल खड्डर शास्त्री (मास्टर जी)
नारायणात्मक शुभाशीष

आपके द्वारा भेजा हुआ पत्र एवं सन्देश प्राप्त हुआ संशोधित विचार एवं लेख गुरुचरणानुरागियों, साधकों, पाठकों तथा आध्यात्मिक लक्ष्य व लक्षणों की लक्षणावृत्ति में बहुत ही सहायक लघुकाय ग्रन्थ भाषानुवाद सिद्ध होगा।

अनन्त श्री विभूषित श्रीमद् श्री पीताम्बरा पीठाधीश्वर श्री स्वामी जी महाराज की अनुकम्पा अहेतुकृपा अनुग्रह साधक शिक्षा दीक्षा के रूप में मुझे 1968 से 1979 तक साक्षात् रहा और है। हम श्री पीताम्बरा पीठ दतिया एवं पीठ विद्वानों, साधको, अनुयायियों तथा सेवकों, न्यासियों को हृदय से सस्नेह शुभाशीष प्रदान करता हूँ, अनवरत।

गीत छन्द दोहा कवित्व हरि विनु अक्षर जेह।
ज्ञानानन्द व्यर्थ प्राण विनु नख शिख सुन्दर देह॥

शुभेच्छु

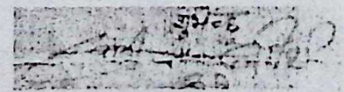

वैशाख शुक्ल दशमी 2076/14.05.19
स्वामी ज्ञानानन्द तीर्थ 9406607636
जगदगुरु शङ्कराचार्य ज्योतिर्मठ अवान्तर भानपुरा पीठ
पोस्ट-भानपुरा जिला-मन्दसौर-458775 (म.प्र.)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रस्तावना

कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् यह एक प्रसिद्ध उक्ति है इसके अनुसार भगवान् कृष्ण को जगद्गुरु माना गया है वर्तमान समय मे श्री शंकराचार्य जी को जगद्–गुरु माना जाता है. यदि हम जगद्गुरु शब्द का अर्थ निकालें तो जगत् का अर्थ है यह सम्पूर्ण दृश्यमान प्रपञ्च अर्थात् सम्पूर्ण विश्व. गुरु शब्द में गु तथा रु दोनों के भिन्न–भिन्न अर्थ हैं गु का अर्थ है अन्धकार तथा रु का अर्थ है प्रकाश. अर्थात जो अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाये. इस प्रकार जगद्गुरु का अर्थ हुआ जो सम्पूर्ण विश्व को अज्ञान रूपी अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाए.

वस्तुतः यह जो दृश्यमान जगत् है वह मिथ्या है उसके मिथ्यत्व को प्रकाशित करने के कारण ही सम्भवतः जगद्गुरु इस उपाधि से शंकराचार्य जी को विभूषित किया गया है. भगवान् श्री कृष्ण और श्रीमद् आदि शंकराचार्य भगवत्पाद भारतीय इतिहास के ऐसे दो महत्वपूर्ण स्तम्भ हैं जिससे

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सनातन धर्म आज भी अपने मूल रुप में सुरक्षित है.

भगवान श्री कृष्ण ने बाल्यकाल से ही दैवीय सम्पत्ति की स्थापना तथा आसुरी सम्पत्ति का विनाश प्रारम्भ कर दिया था. श्रीमद्भगवत् गीता के रूप में सम्पूर्ण सनातन मतावलम्बी लोगों के लिये प्रेरणा स्रोत बना हुआ है. आद्य शंकराचार्य जी ने श्रीमद्भगवद्गीता पर भाष्य लिखकर उसके भाव को प्रकाशित किया. उन्होनें अनेक मत–मतान्तरों में बिखर रहे भारतवर्ष को एक सूत्र में आबद्ध किया. उक्त संकलन माननीय डॉ. श्री मोती लाल खड्डुर जी ने स्कन्दपुराण, वामकेश्वर तन्त्र, आद्य शंकराचार्य विरचित गुरोरष्टक सभी को पढ़कर किया है। गुरु भक्तजन आत्म कल्याण के भागी बनें, यही गुरुदेव से प्रार्थना है कि सब का कल्याण हो.

23.04.2019

न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्

ॐ शम्

आचार्य ॐ नारायण द्विवेदः शास्त्री

श्री पीताम्बरा–पीठ, दतिया (म.प्र.)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री पीताम्बरा पीठ

दतिया (मध्य प्रदेश)

प्रकाशकीय

अखंड मंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।

श्री गुरु गीता के इस श्लोक के संबंध में पूज्यपाद श्री स्वामी जी से एक शिष्य ने पूछा - महाराज जी यह अखंड मंडलाकार से क्या तात्पर्य है। महाराज जी ने कहा आप कहीं मार्ग में जा रहे हैं आगे चल कर आपको दो रास्ते मिलते हैं आप भ्रम में पड़ जाते हैं कि किस मार्ग से जायें जिससे गन्तव्य तक पहुंच जायें। इतने में ही एक राहगीर निकलता है आप उससे अपने गन्तव्य को बता कर उससे मार्ग पूछते हैं वह आपको मार्ग बता देता है। आप उस मार्ग से चल देते हैं और गन्तव्य तक पहुंच जाते हैं। यदि आप भ्रम में पड़कर दूसरे मार्ग चले जाते तो गन्तव्य तक नहीं पहुंच पाते। यही **अखंड मंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्** अर्थात गुरु तत्त्व सब में समाया हुआ है। केवल श्रद्धा, विश्वास की जरूरत है।

श्री गुरु गीता–गुरु की महत्त्ता, गुरु की आज्ञा, गुरु की सेवा, और

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरु को पूर्ण समर्पण करने के लिये शिष्य में तीव्र भावना उत्पन्न करता है जिससे शिष्य का कल्याण होता है।

गुरु गीतात्मकं देवि शुद्ध तत्त्व मयोदितं।

भव व्याधि विनाशार्थं स्वमेव सदा जपेत्॥

श्री मोती लाल जी खड्डर शास्त्री ने गुरु गीता, गुरु स्तवराज व गुर्वष्टकम् इन तीन स्तोत्रों का हिन्दी अनुवाद करके संस्कृत न जानने वाले साधकों को समझने के लिये सरलता कर दी है साथ ही मास्टर जी ने पीठ में रात्रि कालिक गायी जाने वाली आरती और क्षमापन स्तोत्र का भी हिन्दी अनुवाद कर दिया है। इन स्तोत्रों का हिन्दी अनुवाद अभी सुलभ नहीं था। अस्तु इस कमी को भी पूरा करने के लिये श्री मास्टर मोती लाल जी ने बहुत परिश्रम किया है इसके लिये मास्टर जी बहुत-बहुत धन्यवाद के पात्र हैं। श्री पीताम्बरा पीठ इस लघुकाय ग्रन्थ को प्रकाशित करने में प्रसन्नता का अनुभव कर रहा है।

श्री गुरु पूर्णिमा
संवत 2076
सन् 2019

हरि राम सांवला
न्यासी/कोषाध्यक्ष
श्री पीताम्बरा पीठ
दतिया (मध्य प्रदेश)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दो शब्द

गुरु तत्त्व बोध का सागर है

गुरु रित्यक्षरं देवि जपतो मम निश्चितम्।
ब्रह्म हत्या पुरामुक्ता सत्यमेतत्र संशय॥

परशुरामो मातृ वधात् देवेन्द्रो ब्रह्महिंसनात्।
पातकादपि मुक्तअभूत गुरोरुच्चारण मात्रतः *(गुरु तन्त्र)*

सप्तकोटि महामन्त्र निश्चितं विभ्रंश कारकाः
एक एवं महामंत्रो गुरुरित्यक्षरद्वयम्
मन्त्रराजमिदं देवि गुरुरित्यक्षरद्वयम्
स्मृति वेद पुराणाना सारमेव न संशय
गुरु सेवा परमतीर्थं अन्य तीर्थ निरर्थकम्
सर्व तीर्थाश्च ये देवि सद्गुरु चरणाम्बुजम् *(गुरु गीता)*

सात करोड़ महामंत्र चित्त को भ्रमित करने वाले हैं 'गुरु' दो अक्षर का एक मात्र ही महामंत्र सर्वोपरि है। 'गुरु' दो अक्षर ही मंत्रों का राजा है जो स्मृति, वेद, पुराण आदि का निःसंदेह सारभूत है। जिसकी वाणी से 'गुरु' अक्षर ही व्यवहारित होता है उसे कोई मोह नहीं होता। वेद पढ़ने की आवश्यकता उसे नहीं रह जाती। ग-कार के उच्चारण मात्र से ब्रह्म हत्या का दोष नहीं लगता। उ-कार के उच्चारण मात्र से जन्म मरण के पापों से छूट जाता है। रेफ उ-कार और विसर्ग के उच्चारण मात्र से कोटि जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं। परशुराम माता के वध से, इन्द्र ब्रह्म हत्या के पाप से 'गुरु' का उच्चारण करने मात्र से मुक्त हुए थे।

गुरुस्तवराज में आया है -

ध्यानं दैवत पूजनं गुरुतपोदानाग्निहोत्रादयः
पाठो होम निवेषणं पितृमखाह्यभ्यागताच्चार्चा बलिः।
एते व्यर्थफला भवन्ति सततं यस्य प्रसादं बिना
तं वन्दे शिवरुपिणं निजगुरुं सर्वार्थसिद्धिप्रदम्॥

ध्यान, योग, पूजा जप तप या दान हवन श्राद्धादि कर्म महान गुरुतरतप व्रत पाठ आतिथि अभ्यागत का विधिवत पूजागत सत्कर्म सम्मान ये समस्त शुभ कार्य जिनकी कृपा प्रसाद बिना सुफलदायी नहीं होते अर्थात् निरन्तर ही व्यर्थ फलाश्रित हो जाते हैं ऐसे शिवस्वरूप कल्याणकारी समस्त सिद्धियों के प्रदाता अपने समर्थ सदगुरु की वंदना करता हूँ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसी प्रकार गुरु अष्टकम् में आया है -

शरीरं सरूपं तथा वा कलत्रं यशश्चारु चित्रं धनं मेरुतुल्यम् ।
गुरोरंघ्रिपद्मे मन श्चेन्न लग्नं ततःकिं ततःकिं ततःकिं ततःकिं ॥

सुन्दर सुडौल सुरुपवान शरीर, उसी भाँति की रुपवती पत्नी विस्तृत विशाल निर्मल यश कीर्ति अपार धन दौलत होने पर यदि गुरु के चरण कमलों के अग्रभाग में मन नहीं रमता तो सब व्यर्थ गया यानि व्यर्थ नष्ट कर दिया। अस्तु सद्गुरु के पादपद्मों में मन को लीन करना ही जीवन धन सारवान है।

प्रस्तुत लघुकाय ग्रन्थ में गुरुगीता, गुरु स्तवराज एवं गुरु अष्टकम् के श्लोकों का हिन्दी अर्थ करके दिया गया है। पीठ में रात्रि कालिक माई की आरती और क्षमापन स्तोत्र भी हिन्दी अनुवाद सहित दिया गया है। साधना के क्षेत्र में गुरु का स्थान सर्वोपरि होता है। परन्तु संस्कृत पाठ का भावार्थ जानते हुए पाठ हृदय को गुरु के सानिध्य में शीघ्रता से ले जाता है। मात्र शाब्दिक पाठ बहुत अधिक समय बाद ही प्रभावी होता है। इसी अंतप्रेरणा को शायद महाराज जी समझ गये थे और उन्होंने मुझे यह कार्य करने की शक्ति प्रदान की।

इस लघुकाय ग्रन्थ की मूल प्रेरणा के रूप में हैं-श्री पीताम्बरा-पीठाधीश्वर अनन्त श्री विभूषित राष्ट्र गुरु श्री स्वामी जी महाराज। उन्हीं के शुभाशीर्वाद से प्रस्तुत पुस्तक में दिये गये श्लोकों का हिन्दी अनुवाद कर सका हूँ।

ग्रन्थ के प्रकाशन का कार्य श्री पीताम्बरा पीठ कर रहा है। पीठ के न्यासी श्री हरिराम सावला जी के प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूँ। व्याकरणाचार्य एवं पीठ के आचार्य पं. ओमनारायण शास्त्री द्विवेद्ः जी ने अपना बहुमूल्य समय देकर प्रस्तुत पुस्तक के श्लोकों के अनुवाद को आद्योपांत पढ़कर प्रस्तावना लिखी है। मैं उनका हृदय से सदैव ऋणी रहूंगा। उनके प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ।

पुस्तक के मुद्रण का व्यय भार आगरा निवासी श्री नरेन्द्र पञ्जवानी ज्योतिषाचार्य ने सहर्ष वहन किया है। एतद्र्थ मैं उन्हें साधुवाद ज्ञापित करता हूँ और भगवती की कृपा के लिये मैं पीताम्बरा माता से प्रार्थना भी करता हूँ।

कथावाचक पं. यशोदानन्द मिश्र प्रयागराज (उ.प्र.) ने इस कार्य में अथक परिश्रम किया है अतएव उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

साधक एवं तांत्रिक डॉ. सूर्यप्रकाश मिश्र ने शुभकामना देकर मुझे अनुग्रहीत किया है। अस्तु उनके प्रति भी मैं आभार व्यक्त करता हूँ। झाँसी निवासी भाई मधुर वर्मा संचालक स्वाधीन प्रेस द्वारा पुस्तक टंकण कार्य बड़ी सावधानी से किया गया है, एतदर्थ उन्हें भी मैं साधुवाद देता हूँ।

विनयावनत
डॉ. मोतीलाल खड्डरशास्त्री
(मास्टर जी)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुभकामना

श्री गुरुचरण सरोज रज, निजमन मुकुर सुधार।

बरनऊं रघुवर विमल जस, जो दायक फल चारि।।

दुर्गम काज जगत् के जेते, सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।

(हनुमान चालीसा)

डॉ. श्रीमोती लाल खड्डर शास्त्री (मास्टर जी) द्वारा लिखित गुरुगीता, गुरु स्तवराज एवं गुरु अष्टक के श्लोकों का हिन्दी अनुवाद करके पुस्तक रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो समस्त भक्त-जनों का मार्ग प्रशस्त करेगा, ऐसा विश्वास है।

मैं माई महाराज से उनके दीर्घायु होने की कामना करते हुए प्रार्थना भी करता हूँ कि भविष्य में इसका अंग्रेजी रूपान्तर भी हो।

शुभकामना सहित

नरेन्द्र पंजवानी
ज्योतिषाचार्य
डी-563 कमला नगर, आगरा (उ0प्र0)
मो.-9410875488

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुभकामना

पीताम्बरा पीठ के वयोवृद्ध साधक मा. मोतीलाल खड्डर जी के द्वारा गुरु गीता–गुरुस्तवराज एवं गुरु अष्टक के श्लोकों का यह हिन्दी अनुवाद एक सराहनीय कार्य है।

इससे हिन्दी भाषी साधक एवं संस्कृत में अर्थ न समझ पाने वाले साधक लाभान्वित होंगे।

हम उनके इस कार्य को साधुवाद देते हैं। स्वामी जी की कृपा से पुस्तक लोकप्रिय होगी।

शुभेच्छु

सू.प्र.मिश्र

(डॉ. सूर्यप्रकाश मिश्रा)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ श्रीगुरुगीता प्रारंभः॥

॥श्रीगणेशायनमः॥ ॥श्रीगुरुभ्योनमः॥

ॐ अस्य श्रीगुरुगीतास्तोत्रमन्त्रस्य भगवान् सदाशिव ऋषिः। नानाविधानि छंदांसि। श्रीगुरुपरमात्मा देवता। हं बीजं। सः शक्तिः। क्रों कीलकं। श्रीगुरु कृपा प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

अथ करन्यासः -

ॐ हं सां सूर्यात्मने अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ हं सीं सोमात्मने तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ हं सूं निरंजनात्मने मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ हं सैं निराभासात्मने अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ हं सौं अतनुसूक्ष्मात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ हं सः अव्यक्तात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अथ हृदयादिन्यासा:-

ॐ हं सां सूर्यात्मने हृदयाय नमः।

ॐ हं सीं सोमात्मने शिरसे स्वाहा।

ॐ हं सूं निरंजनात्मने शिखायै वषट्।

ॐ हं सैं निराभासांत्मने कवचाय हुँ।

ॐ हं सौं अतनुसूक्षात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ हं सः अव्यक्तात्मने अस्त्राय फट्।

ॐ ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ ध्यानम्

हंसाभ्यां परिवृत्तपत्रकमलैर्दिव्यैर्जगत्कारणै
विश्वोत्कीर्णमनेकदेहनिलयैः स्वच्छन्दमात्मेच्छया॥
तद्योतं पदशांभवं तु चरणं दीपांकुरग्राहिणम्।
प्रत्यक्षाक्षरविग्रहं गुरुपदं ध्यायेद्विभुं शाश्वतम्॥
मम चतुर्विधपुरुषार्थसिद्धयर्थे जपे: विनियोगः।

गुरुदेव का ध्यान :-

ब्रह्म जीव से घिरे कमल पत्र्नत् सूक्ष्म हृदय वाले परम स्वतन्त्र अपनी रुचि के अनुसार दिव्य जगत् विश्वरूप अनेक देह वाले इस प्रपन्चात्मक जगत् को परिभाषित करने वाले शिव स्वरूप वाले जगत् कारण को प्रकाशित करने वाले नित्य व्यापक प्रत्यक्ष अक्षर आकार ब्रह्म गुरु स्वरूप का हम ध्यान करते हैं।

ऋषिरुवाचः

गुह्यादगुह्यतरा विद्या गुरुगीता विशेषतः।
त्वत्प्रसादाच्च श्रोतव्यं तत्सर्वं ब्रूहि सूत मे ॥१॥

ऋषिराज कथन :-

नैमिषारण्य की पावन धरती पर विराजमान ८८००० शौनाकादि ऋषि जो कि सुबह सत्र में हवन पूजन और सायं स्तव में कथा रसपान करने के क्रम मे प्रश्न किया - कि हे श्रीमान् ! हे भगवन् ! आप हमें परम गोपनीय रहस्यमय गुरुगीता का उपदेश दीजिये मैं विस्तार से उसे पूरा-पूरा सुनना चाहता हूं ०१

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूत उवाच :-

कैलासशिखरे रम्ये भक्तिसाधननायकं।

प्रणम्य पार्वती भक्त्या शंकरं परिपृच्छति ॥२॥

सूत उवाच :-

शौनाकादि ऋषियों के प्रश्न को सुनकर सूत जी बोले जो कुछ आप गुरुगीता के सहारे आप हमसे जानना चाहते हैं प्राचीन काल में एक बार माता पार्वती ने भूतभावन भोलेनाथ से ऐसा ही प्रश्न बड़ी विनम्रता से पूछा और जो कुछ कैलाश पर्वत पर भोलेनाथ ने महिमा का बखान किया मैं विस्तार से उसको कहता हूं सावधानी से सुनो। ०२

पार्वत्युवाच :-

ॐ नमो देवदेवेश परात्पर जगद्गुरो।

सदाशिव महादेव गुरुदीक्षां प्रदेहि मे ॥३॥

केन मार्गेण भो स्वामिन् देही ब्रह्ममयो भवेत्॥४॥

त्वं कृपां कुरु मे स्वामिन्नमामि चरणं तव॥५॥

पार्वती उवाच :-

सूतजी कहते हैं कि ऋषियों जगत जननी जगदम्बा स्वरूपा माता पार्वती बड़ी विनम्रता से शिवजी से पूछी "हे देवाधदेव महादेव मैं आपके चरण-शरण मे हूं इसलिये हम पर अपनी कृपा करते हुये गुरुदीक्षा के क्रम में ऐसे अनुपम मार्ग का मार्गदर्शन करिये जिसके सहारे जीवात्मा अपने आत्म स्वरूप को पूर्ण तरह पहचान ले और मुक्त हो जाए। ऐसे मार्ग का मार्गदर्शन करें। ०३ ०४ ०५

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ईश्वर उवाच :-

मम रूपासि देवि त्वं त्वत्प्रीत्यर्थं वदाम्यहं॥

लोकोपकारकः प्रश्नो न केनापि कृतः पुरा॥६॥

ईश्वर उवाच :-

सूतजी कहते हैं कि ऋषियो, मईया के प्रश्न को सुन कर भोलेनाथ प्रशंसा करने लगे और कहने लगे कि हे देवि ! आपने बड़ा ही सुन्दर प्रश्न लोकहित के लिये कर दिया इससे केवल आपका ही नहीं अपितु समूची मानव जाति का कल्याण होगा। ऐसा प्रश्न आपसे पहले अभी तक किसी ने नहीं किया था। ०६

दुर्लभं त्रिषु लोकेषु तच्छ्रुणुष्व वदाम्यहं।

किञ्चिद् गुरुं विना नान्यत्सत्यं सत्यं वरानने॥७॥

भोलेनाथ कहते हैं देवि ! सच कहूं इस त्रैलोक्य मे बिना गुरुदेव की कृपा के कुछ भी पाना सम्भव नहीं है, सब दुर्लभ है। ०७

वेदशास्त्रपुराणानि इतिहासादिकानि च।

मंत्रयंत्रादिविद्यानां स्मृतिरुच्चाटनादिकं ॥८॥

सूतजी कहते हैं ऋषियो - वेद, शास्त्र, पुराण की विद्यायें, मन्त्र तन्त्र बिना गुरु की कृपा के फलीभूत नहीं होती, इसलिये गुरुदेव के ही चरण-शरण में समर्पित हो जाना चाहिए। ०८

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शैवं शाक्तागमादीनि अन्यदबहुमतानि च।
अपभ्रंशः समस्तानि जीवानां भ्रांतचेतसां ॥९॥

अब ऋषियों को समझाते हुए कह रहे हैं कि महर्षियों सरल सहज साधन तो यही है कि गुरुजी के श्री चरण में ये जीवात्मा शाश्वत रहे लेकिन बहुत सारे मलों में उलझ करके संसार में भटकते रहते हैं और अपने आत्मस्वरूप को नहीं समझ पाते। ०९

यज्ञो व्रतं तपो दानं जपस्तीर्थं तथैव च।
गुरुतत्त्वमविज्ञाय मूढास्ते चेतरे जनाः ॥१०॥

सूतजी का कहना है कि ये जीवात्मा चाहे जिस प्रकार से विशेष यत्न कर ले, व्रत कर ले, तप कर ले तथा चाहे जिस तीर्थ में जाकर विशेष जप अनुष्ठान कर ले इन सब का कोई प्रभाव तब तक नहीं होता जब तक गुरु की कृपा दृष्टि नहीं होती, इसलिए गुरु की संरक्षण स्थिति में जीना चाहिये अन्यथा मूर्ख की भाँति होकर विचरण ही करेगा। १०

यदंघ्रिकमलद्वंद्वं द्वंद्वतापनिवारकं ।
तारकं भवसिंधौ हि सद्गुरोः प्रणमाम्यहं ॥११॥

इसलिये हे महर्षियों ! हम सब मिलकर श्री सदगुरुदेव के कमलवत चरणों में कोटि कोटि प्रणाम करते हैं जिसके सहारे जीवात्मा के तीनों ताप (दैहिक़, दैविक, भौतिक) तत्काल नष्ट हो जाते हैं और जीव अपने आप को पहचान जाता है उसी श्रीचरण मे हम सबका बारम्बार प्रणाम है। ११

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गूढ़विद्या जगन्माया देहे चाज्ञानसंभवा।

उदयं स्वप्रकाशेन गुरुशब्देन कथ्यते ।।१२।।

सूतजी कहते हैं कि हे महर्षियों - इस संसार के गुरु तत्व को और संसार की माया से अर्थात (तत्वज्ञान पाने के लिये - और माया के प्रभाव से बचने के लिये) गुरुदेव के उपदेशों का श्रवण करना चाहिये और इसी के सहारे अपने आपको जगा लेना चाहिये, पहचान लेना चाहिये। १२

देही ब्रह्म भवेत्तस्य तत्कृपार्थं वदामि ते।

सर्वपापविशुद्धात्मा श्रीगुरोः पादपंकजं ।।१३।।

इस प्रकार गुरु महिमा के क्रम में सूतजी कहते हैं कि है ब्रह्मर्षियों ये जीवात्मा गुरुदेव के चरणों में समर्पित होकर सेवा करते - करते उनकी कृपा के सहारे शुद्ध विशुद्ध को जाता है और साक्षात वही सिद्धान्तों के अनुपालन करने के कारण ब्रह्ममय हो जाता है अर्थात हर रूप में प्रभु का दर्शन करता है। १३

सर्वतीर्थावगाहस्य प्राप्नोति स फलं नरः ।

गुरुपादोदकं पीत्वा जलं शिरसि धारयेत् ।।१४।।

सूतजी कहते हैं कि महर्षियों ये जीवात्मा जो अनेक तीर्थ स्थलों पर जा-जाकर पुष्प अर्जित करने का प्रयास करता है। यदि पूर्ण तन्मयता से गुरुदेव के चरणों का प्रक्षालन करके श्रद्धापूर्वक उसी जल का पान कर ले तो सारा का सारा फल उसे उतने से प्राप्त हो जाएगा, तो तीर्थों में जाने का क्या लाभ ? १४

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शोषणं पापपंकस्य दीपनं ज्ञानतेजसां ।
गुरुपादोदकं सम्यक् संसारार्णवतारकं ॥१५॥

पूज्य गुरुदेव जी के श्रीचरण का प्रक्षालन जल पीकर ये जीवात्मा इस संसार सागर से पार हो जाता है और उसके सारे पाप समाप्त हो जाते हैं और साथ ही साथ एक दिव्य ज्ञान ज्योति प्रकाशित हो जाती है जिसके कारण सहजता में मुक्त हो जाता है। १५

अज्ञानमूलहरणं जन्मकर्मनिवारणं ।
ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्थं गुरुपादोदकं पिबेत् ॥१६॥

सूतजी कहते हैं कि ऋषियो - गुरुदेव के पाँव प्रक्षालन जल के सहारे इस जीवात्मा के सारे बन्धन जड़ से मिट जाते हैं जन्म कर्म का बन्धन समाप्त हो जाता है और साथ ही साथ ज्ञान वैराग्य जीवन में जागृत हो जाता है। १६

गुरुपदोदकं पानं गुरोरुच्छिष्टभोजनं ।
गुरुमूर्तेः सदा ध्यानं गुरुस्तोत्रं सदा जपेत् ॥१७॥

इसलिये हे ऋषिगणों - गुरुदेव के प्रक्षालित चरण जल का पान करना चाहिये, मिल सके, सम्भव हो तो जूठा भोजन भी प्रसाद रूप में ग्रहण करना चाहिए और सदैव उन्हीं के ध्यान में डूबकर इस जीवात्मा को अपना कल्याण कर लेना चाहिए। १७

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

काशीक्षेत्र निवासोऽसौ जान्हवीचरणोदकं ।
गुरुर्विश्वेश्वरः साक्षात् तारको ब्रह्म निश्चितं ॥१८॥

अब सूतजी कहते हैं कि हे महर्षियों, गुरुदेव की कृपा महिमा के बखान क्रम में भोलेनाथ पार्वती से कहते हैं कि हे प्रिये वाराणसी नगरी में निवास कर रहे जो भक्तजन हैं, गंगा में स्नान करके जलपान करके साक्षात गुरुदेव के ही धाम को प्राप्त होते हैं। १८

गुरोः पादांकितं भूत्वा गयास्ते सोक्षयो वटः ।
तीर्थराजः प्रयागस्तु गुरुमूर्ते नमोनमः ॥१९॥

इसलिए महर्षियो – गुरुदेव के चरणों को अंकितरूप समझकर गया धाम में विराजमान अक्षयवट को और तीर्थराज प्रयाग को गुरुमूर्तिमय मानकर हम प्रणाम करते हैं। १९

गुरुमूर्ति स्मरेन्नित्यं गुरुनाम सदा जपेत् ।
गुरोराज्ञां प्रकुर्वीत गुरोरन्यन्न भावयेत् ॥२०॥

इसलिए गुरुदेव की छवि का ध्यान प्रति क्षण करना चाहिए और शंकर रूपी गुरु का नाम जप करते रहना चाहिए, बिना गुरु की आज्ञा के कुछ भी नहीं करना चाहिए, जो गुरूदेव की भावना के अनुसार हो, वही कर्म करना चाहिए। २०

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुवक्त्रंस्थितं ब्रह्म प्राप्यते तत्प्रसादतः ।

गुरुमूर्तेः सदा ध्यानं कुलस्त्री स्वपतेर्यथा ॥२१॥

सूतजी कहते हैं कि गुरुदेव के बताए सिद्धान्तों पर चलने से जीवात्मा ब्रह्म मे स्थित होकर जीने लगता है, इसलिए पतिव्रता को भी चाहिए कि जैसे पति मे डूबी रहती है, ऐसे ही गुरु के प्रति भी आदर भाव रखे। २१

स्वाश्रमं च स्वजातिं च स्वकीर्तिपुष्टिवर्धनं ।

अन्यत्सर्वं परित्यज्य गुरोरन्यं न भावयेत् ॥२२॥

इसलिए सूतजी इस तथ्य को स्वीकार करते हैं कि हे महर्षियों बिना गुरु की कृपा के कोइ भी अपने आश्रम को पवित्र नहीं कर सकता, न ही अपनी जाति को सम्मानित कर सकता है और न ही अपने कुल की कीर्ति बढ़ा सकता है इसलिए गुरुदेव के चरण-कमल मे दण्डवत रहना चाहिए। २२

अनन्याश्चिंतयंतो मां सुलभं परमं पदम्।

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन गुरोराराधनं कुरु ॥२३॥

इसलिए अनन्य भाव से इसी को सर्वथा सरल सहज शाश्वत साधन स्वीकारते हुए सभी को गुरुदेव के ध्यान में डूबकर अपने को संसार के दुष्प्रभाव से मुक्त कर लेना चाहिए। २३

गुरुवक्त्रस्थिता विद्या गुरुभक्त्या तु लभ्यते ।

त्रैलोक्ये स्फुटवक्तारो देवाद्याः सुरपन्नगाः ॥२४॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूतजी कहते हैं कि चाहे जितना गुणवान वक्ता हो (मनुष्य, देव) वो ये वाकपटुता, गुरु के पास से तभी ग्रहण कर सकता है जब उसमें भक्ति का भाव हो, अतः गुरु के प्रति स्नेहभाव रखना चाहिए। २४

गुकारस्त्वंधकारःस्यादरुकारस्तं निरासकृत्।
अंधःकारविनाशत्वाद्गुरुरित्यभिधीयते ॥२५॥

कहने का भाव यह है कि हे ऋषियों, गुरुनाम के उच्चारण मात्र से ही जीवात्मा के सारे अज्ञान समाप्त हो जाते हैं इसीलिए गुरु से बड़ा कोई और नहीं। २५

गुकारः प्रथमो वर्णो मायादि गुणभासकः ।
रुकारो द्वितीयं ब्रह्म मायाभ्रांतिविमोचकं ॥२६॥

सूतजी कहते हैं कि गुरु, दो वर्णो के मेल से बना हुआ शब्द है और इसका जो पहला शब्द गु-कार है, यह संसार की माया को पूरी तरह से व्यक्त करता है, और रु-कार इस माया के प्रभाव को नष्ट करता है, और इसी शब्द के उच्चारण भाव से ही जीव माया से मुक्त हो जाता है। २६

एवं गुरुपदं श्रेष्ठं देवानामपि दुर्लभं ।
हाहाहूहूगणैश्चैव गंधर्वाद्यैश्च पूज्यते ॥२७॥

इस तरीके गुरु शब्द की महिमा का उल्लेख करते हुए सूतजी ने कहा कि ऋषियों, गुरुदेव भगवान के पद से बढ़कर कोई दूसरा पद नहीं है, यह पद देवताओं के लिये भी दुर्लभ है, और आज भी हा हा हू हू गन्धर्व अपने समस्त गुण के सहित गुरु की पूजा करते हैं जो कि गन्धर्वराज है। २७

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एवं तेषां च सर्वेषां नास्ति तत्वं गुरोः परं ।
आसनं शयनं वस्त्रं वाहनं भूषणादिकं ॥२८॥

इसलिए हे शौनाकादि ऋषियों गुरु से बढ़ कर इस त्रैलोक्य मे कोई दूसरा तत्व नहीं है, इसलिए चाहिए कि संसारी लोग, आसन, शयनसेज, वस्त्र, आभूषण, गो, इत्यादि गुरुदेव को दान करते हुए अपने आप को उनकी कृपा छांव से जोड़ कर रखें। २८

साधकेन प्रदातव्यं गुरुसंतोषकारकं ।
गुरोराराधनं कार्यं जीवितं वै निवेदयेत् ॥२९॥

हे महर्षियों - साधक को चाहिए कि गुरुदेव को संतुष्ट करने के लिये हर सम्भव प्रयास करे और उन्ही के नाम स्मरण के सहारे अपना कोई भी छोटा बड़ा कार्य करना शुरु करे, उनकी (सदगुरुदेव) कृपा से कोई बाधा नहीं होगी। २९

कर्मणा मनसा वाचा नित्यमाराधयेदगुरुं ।
दीर्घदंडं नमस्कृत्य निर्लज्जो गुरुसन्निधौ ॥३०॥

इसलिए इस जीवत्मा को मन से, कर्म से, वाणी से हमेशा गुरुदेव के चरणों में प्रेमभाव होना चाहिये और उन्हीं के सानिध्य मे जीना चाहिये। ३०

शरीरार्थं च संप्राप्तं पशुपुत्रगृहाणि च ।
आत्मदारादिकं चैव सद्गुरुं वै निवेदयेत् ॥३१॥

अब सूतजी कहते हैं कि ऋषियों अपने शारीरिक स्वास्थ्य के लिये, सम्पत्ति की प्राप्ति के लिये, पशु, पुत्र, परिवारजन के कल्याण के लिये,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपने आत्म कल्याण के लिये, पत्नी इत्यादि की सुदृढ़ वैभवपूर्ण स्थिति के लिये गुरुदेव से ही प्रार्थना करनी चाहिये, क्योंकि ये सब उन्हीं से सम्भव है। ३१

संसारवृक्षमारूढाः पतन्तो नरकार्णवे ।
येन चैवोदधृताः सर्वे तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥३२॥

सूतजी कहते हैं कि ऋषियों हम उन गुरुदेव के चरण-कमल में प्रणाम करते हैं जो संसार रूपी वृक्ष पर आरुढ़ समस्त जीवात्माओं को नरकगामी होने से बचाते हुए आत्मस्वरूप का बोध कराते हुए मोक्ष की स्थिति प्रदान करते हैं। ३२

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुदेवो महेश्वरः ।
गुरुरेकं परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥३३॥

इसलिए महर्षियों और क्या कहें, साक्षात गुरुदेव ही ब्रह्मा, विष्णु और महेश हैं, गुरु ही साक्षात परमब्रह्म हैं उनके अतिरिक्त कहीं कुछ भी और नहीं, उनके श्रीचरण में मेरा प्रणाम है। ३३

हेतवे जगतामेव, संसारार्णव सेतवे ।
प्रभवे सर्वविद्यानां शंभवे गुरवे नमः ॥३४॥

इस प्रकार गुरुदेव की महिमा का विस्तारित वर्णन शुरु करते हैं और बताते हैं कि महर्षियों गुरुदेव ही संसार को प्रकटित करने के लिये स्रोत हैं और वही संसार सागर से पार पाने के लिए सभी के लिए पुल रूप होकर मुक्त भी करते हैं और वही समस्त विद्याओं के स्वामी हैं ऐसे शिव स्वरूप गुरुदेव के दिव्य श्रीचरण में मेरा कोटि कोटि प्रणाम। ३४

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अज्ञानतिमिरांधस्य ज्ञानांजनशलाकया ।

चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥३५॥

सूतजी कहते हैं कि महर्षियों - जिन श्री सदगुरुदेव के ज्ञान रुपी अंजन के सहारे संसारी लोग अपने हृदय के अज्ञान रूपी अंधकार को मिटा देते हैं तो ये अनुपम स्थिति में जिनके दिव्य ज्ञान अंजन को शलाका के सहारे आँख में लगाते ही संसार के दोष समाप्त हो जाते हैं ऐसे सर्वशक्तिमान गुरुदेव के श्री चरणों मे मेरा प्रणाम है। ३५

अखंडमंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरं ।

तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥३६॥

सूतजी कहते हैं कि ऋषियों ये जो चराचर जगत जड़ और चैतन्य से व्याप्त दिख रहा है यह सब कुछ (जड़, चेतन) रूप मे साक्षात गुरुदेव ही हैं और जिनकी कृपा होते ही ये जीवत्मा संसार न देखकर प्रत्यक्ष गुरुरूप का दर्शन करने लगती है ऐसे श्री गुरु के चरणों मे प्रणाम करता हूं। ३६

सर्वश्रुतिशिरोरत्नं विराजितपदांबुजं ।

वेदांतांबुजसूर्याय तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥३७॥

अब सूतजी समझाते हैं कि ऋषियों - श्रुतियां कहती हैं कि गुरुदेव सारे रत्नों से सुशोभित हैं वही वेद, जल और सूर्य रूप में भी है उनके कमलवत चरण मे मेरा प्रणाम है। ३७

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यस्य स्मरणमात्रेण ज्ञानमुत्पद्यते स्वयं ।

स एव सर्वसंपत्तिः तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥३८॥

इसलिए महर्षियों जिनके नाम स्मरण मात्र से ही ज्ञान अपने आप में ही (हृदय) में प्रकाशित हो उठता है और जिनकी कृपा से भारी सम्पत्ति जीव को प्राप्त हो जाती है ऐसे गुरुदेव के श्री चरण में मेरा प्रणाम है। ३८

चैतन्यं शाश्वतं शांतं व्योमातीतं निरंजनं ।

बिंदुनादकलातीतं तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥३९॥

अतः ऋषियों जो गुरुदेव साक्षात चैतन्य हैं शाश्वत हैं नित्य हैं और अपने ही आत्म स्वरूप में डूबे निर्गुण निराकार हैं ऐसे बिन्दुनाद की कला से परे गुरु के चरण मे मैं बारम्बार प्रणाम करता हूं। ३९

स्थावरं जंगमं चैव तथा चैव चराचरम् ।

व्याप्तं येन जगत् सर्वं तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥४०॥

सूतजी कहते हैं कि इस चराचर संसार में जो भी स्थावर और जंगम जीव हैं (स्थावर जड़) जंगम (चलते-फिरते) हर जीव में हम गुरु स्वरूप का दर्शन करते हुए हम उनके चरणों में प्रणाम करते हैं। ४०

ज्ञानशक्तिसमारूढं तत्वमालाविभूषितं ।

भुक्तिमुक्तिप्रदातारं तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥४१॥

सूतजी कहते हैं कि वही गुरुदेव ही, ज्ञान शक्ति से युक्त तत्व की अलौकिक माला से विभूषित और भोग मोक्ष के दाता हैं ऐसे समर्थवान गुरु के श्रीचरण में मेरा प्रणाम है। ४१

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनेकजन्मसंप्राप्तं कर्म बंधविदाहनं ।
स्वात्मज्ञानप्रभावेन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥४२॥

कहने का भाव यह है कि जो गुरुदेव अपने ज्ञान उपदेश के माध्यम से जीवात्माओं के अनेक जन्मों के पाप को नष्ट करते हुए उसे कर्म बन्धन से मुक्त कर देते है उन्हें मैं प्रणाम करता हूं। ४२

मन्नाथः श्रीजगन्नाथो मुद्गुरुः श्रीजगद्गुरुः ।
सर्वात्मा सर्व भूतात्मा तस्मै श्री गुरवेः नमः ॥४३॥

सूतजी कहते हैं कि मेरे गुरु ही जगतनाथ हैं वही जगतगुरु हैं और वही सबकी आत्मा हैं ऐसे सर्वभूत सर्वात्मा श्री शिवस्वरूप गुरु के चरण मे प्रणाम करता हूं। ४३

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोःपदं ।
मंत्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा ॥४४॥

इसलिए अगर ध्यान मुद्रा में हो तो गुरुदेव के स्वरूप का ध्यान करो, पूजा करने की इच्छा है तो गुरु के चरण की पूजा करो, मंत्र जाप करने की इच्छा है तो उनके वाक्यों को भरिए और इस प्रकार उन्हीं की कृपा के सहारे संसार से मुक्त हो जाइए। ४४

सप्तसागरपर्यंतं तीर्थस्नानादिजं फ़लं ।
गुरोरंध्रिपयो बिंदुसहस्रांशे न दुर्लभम् ॥४५॥

सूतजी कहते हैं कि ऋषियों सात समुद्र की यात्रा तथा समस्त तीर्थस्थलों

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पर पहुंच कर स्नान करने से जो फल प्राप्त होता है उसका १००० गुना फल केवल गुरु को दूध पिलाने से ही प्राप्त होता है, इसमें कोई सन्देह नहीं है। ४५

ज्ञानं विना मुक्तिपदं लभतेः गुरुभक्तितः ।
गुरोः समानता नास्ति श्रेयोसौ गुरुमार्गिणां ॥४६॥

महर्षियो - जीवात्माएँ संसार सागर से अपने आप को मोक्षपद की प्राप्ति तभी करा सकती हैं जब ज्ञान की प्राप्ति होगी और ये दिव्य ज्ञान की प्राप्ति तभी होगी जब गुरु के प्रति प्रीति विश्वास भक्ति का भाव होगा, इसलिए गुरु से बढ़कर उनके समान कोई और नहीं, अतः गुरु के ही अधीन होना चाहिए। ४६

यस्मात्परतरं नास्ति नेतिनेति च वै श्रुतिः ।
मनसा वचसा चैव सर्वदाऽऽराधयेद्गुरूं ॥४७॥

सूतजी कहते हैं कि इसलिए श्रुतियां बार-बार गाती हैं, समझाती हैं कि गुरु से बढ़कर कोई और नहीं, इसलिए मन से, वाणी से सदैव गुरुदेव का ही ध्यान करना चाहिए और उन्हीं का गुणगान करना चाहिए। ४७

मदाहंकारगर्वेण विद्या तपबलान्वितः ।
संसारकुहरावर्ते घटीयंत्रं यथा पुनः ॥४८॥

अब सूतजी कहते हैं कि महर्षियों चाहे जैसा उच्चकोटि का विद्वान हो, चाहे जितना बड़ा तपस्वी हो, बलवान हो, लेकिन अगर इन सारी गुणवत्ता के साथ वह गुरु के चरण-शरण में न होकर अभिमान करता है

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तो उसका सब कुछ तप, बल, धन पौरुष क्षणभाव में ऐसे क्षीण हो जाता है जैसे सूर्य का प्रकाश कुहरा भेद देता है, ऐसे ही जीव का अभिमान उसको खा लेता है। ४८

न मुक्ता देवगंधर्वाः पितरो यक्षकिन्नराः ।
ऋषयः सर्वसिद्धाश्च गुरुसेवापराङ्मुखाः ॥४९॥

चाहे देवता हो, गन्धर्वा हो, पितरगण, यक्ष, किन्नर, ऋषि हों, ये सब गुरुदेव भगवान के ही सहारे सिद्धि पद को प्राप्त होते हैं बिना गुरु के कुछ भी सम्भव नहीं है। ४९

ध्यानं श्रणु महादेवि सर्वानंदप्रदायकं ।
सर्वसौख्यकरं चैव भुक्तिमुक्तिविशारदं ॥५०॥

इसलिए ऋषियों शिवजी कहते हैं कि हे पार्वती ! ध्यान से सुनो, संसार का सारा सुख, सारा वैभव, आनन्द की प्राप्ति, भोग और मोक्ष ये सब गुरुदेव से ही प्राप्त किया जा सकता है इसलिए उनके आश्रय में जीना चाहिए। ५०

ब्रह्मानंदं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्ति ।
द्वन्दातीतं गगनसदृशं तत्वमस्यादिलक्ष्यं॥
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं।
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरूं तं नमामि ॥५१॥

सूतजी कहते हैं कि गुरुदेव ही जो ज्ञानमूर्ति हैं वही हमेशा ब्रह्म के आनन्द में डूबकर सुख प्राप्त करते हैं और जीव रूप संसार में प्रकट होकर

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्वन्दात्मक स्थिति में जीव को भटकाते रहते हैं और जब जीव गुरुदेव के चरण-शरण में हो जाता है तो मुक्त हो जाता है। ५१

नित्यं शुद्धनिराभासं निराकारं निरंजनं।

नित्यबोधचिदानंदं गुरुं ब्रह्म नमाम्यहं ॥५२॥

सूतजी कहते हैं हम गुरुदेव की वन्दना करते हैं जो नित्य, शुद्ध, विशुद्ध, निराकार, निरंजन स्वरूप में भी हमेशा सत चित आनन्द में रमण करते हैं उन्हे प्रणाम करते हैं। ५२

हृदंबुजे कर्णिकमध्यसंस्थं सिद्धासने संस्थितदिव्यमूर्तिः।

ध्यायेद्गुरुं चंद्रकलाप्रकाशं सच्चित्सुखाभीष्टवरप्रदानं ॥५३॥

इस प्रकार समझाते हुए कहते हैं कि हम उन गुरुदेव का ध्यान करते हैं जो कमल के मध्य भाग मे स्थित कमलासन पर विराजमान दिव्यमूर्ति, जो अपने तपोबल के प्रभाव से संसार को चन्द्रमा जैसी पावन प्रकाश से प्रकाशित करते हैं और अभीष्ट फल प्रदान करते हैं उन्हें प्रणाम करते हैं। ५३

आनंदमानंदकरं प्रसन्नं ज्ञानस्वरूपं निजबोधरूपं।

योगींद्रमीड्यं भवरोगवैद्यं श्रीमद्गुरुं नित्यमहं नमामि ॥५४॥

सूतजी कहते हैं महर्षियों – जो अपने आत्मस्वरूप को जगाकर ज्ञानस्वरूप को जगाकर ज्ञान स्वरूप करके, प्रसन्नता के साथ परमानन्द में डूबे रहते हैं और जो योगियों के भी संसार रूपी रोग को समाप्त कर मुक्त कर देते हैं उनके श्री चरण में मेरा नित्य प्रणाम। ५४

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकः न गुरोरधिकः।
शिवशासनतः शिवशासनतः शिवशासनतः शिवशासनतः ॥५५॥

इसलिए हे महर्षियों – गुरुदेव से बढ़कर कोई नहीं गुरुदेव के अतिरिक्त किसी को जानते हीं नही क्यां उनसे बढ़कर कोई दूसरा नहीं इसलिए शिव स्वरूप गुरु के श्री चरण में मैं प्रणाम करता हूं। ५५

एवं श्रुत्वा महादेवि गुरुनिंदां करोति यः।
स याति नरकं घोरं यावच्चंद्रदिवाकरौ ॥५६॥

सूतजी कहतें हैं कि भगवान भोलेनाथ से ये अनुपम रहस्य जानने के पश्चात माता पार्वती कहती हैं कि जो गुरुदेव की निन्दा करता है, वह घोर नरक की अधोगति प्राप्त करता है। ५६

यो वै हुंकृत्य हुंकृत्य गुरुं निर्जित्य वादतः।
अरण्ये निर्जले देशे स भवेद्ब्रह्मराक्षसः ॥५७॥

इस प्रकार मईया कहती है कि जो गुरु की आज्ञा का पालन न करके वाद-विवाद कुतर्क करता है वह जंगल में निर्जल प्रदेश में ब्रह्मराक्षस रूप धारण करता है। ५७

मुनिभिः पन्नगैर्वापि सुरैर्वा शापितो यदि।
कालमृत्युभयाद्वापि गुरु रक्षति पार्वती ॥५८॥

सूतजी कहते हैं महर्षियों भगवान शिव कहते हैं कि प्रिये मुनिजन, पन्नग, देवता किसी को श्रापित भी किए हों तो वह (जीवात्मा) काल के मुख

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से भी गुरु कृपा के सहारे बचाया जा सकता है। ५८

अशक्ता हि सुराः सर्वेः ह्यशक्ता मुनयस्तथा।
गुरुशापहताः क्षीणा क्षयं यांति न संशयः ॥५९॥

सूतजी कहते हैं कि ऋषियों देवताओं के द्वारा श्रापित और मुनियों के द्वारा श्रापित जीव बच सकता है, पुष्टि प्राप्ति कर सकता है किन्तु गुरुदेव के द्वारा श्रापित व्यक्ति बच नहीं सकता। ५९

मंत्रराजमिदं देवि गुरुरित्यक्षरद्वयं।
श्रुतिवेदांतवाक्येन गुरुः साक्षात्परं पदं ॥६०॥

इसलिए अब शिवजी कहते हैं कि पार्वती दो अक्षर से बना शब्द जो गुरु है यही मन्त्रों का राजा है, श्रुतियां वेद कहते हैं गुरु साक्षात परमपद है कोई सामान्य पद नहीं है। ६०

श्रुतिस्मृतिमविज्ञाय केवलं गुरुसेवकाः।
ते वै संन्यासिनः प्रोक्ता इतरे वेषधारिणः ॥६१॥

सूतजी कहते हैं जो सन्यासी महात्मा महापुरुष है वो भी यही कहते हैं कि श्रुतियाँ, स्मृतियां विज्ञाय भी सही सुझाव देते हैं कि केवल गुरुदेव की ही सेवा करनी चाहिए। ६१

नित्यं ब्रह्मनिराकारं निर्गुणं बोधयेत्परं।
पूर्णब्रह्म निराभासं दीपो दीपांतरं यथा ॥६२॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूतजी कहते हं कि जो नित्य निरन्तर निर्गुण निराकार ब्रह्म में डूबे अपने आप को ऐसे प्रकाशित कर रहे हैं जैसे दीपक-दीपक की प्रकाशिक स्थिति में एक रहता है। ६२

गुरोः कृपाप्रसादेन आत्मारामो हि लभ्यते।
अनेन गुरुमार्गेण आत्मज्ञानं प्रवर्तते ।।६३।।

इसलिए ऋषियों जो आत्माराम है, अर्थात जो आनन्द में ब्रह्ममयस्वरूप का अनुभव कर आनन्दित हो रहे हैं तो भी गुरु की कृपा के ही कारण से प्रकाशित हैं, गुरुदेव के बताए हुए अनेक मार्गों के सहारे अपने को आत्मज्ञान स्वरूपमय कर लेते हैं। ६३

आब्रह्मस्तंबपर्यंतं परमात्मस्वरूपकं।
स्थावरं जंगमं चैव प्रणमामि जगन्मयं ।।६४।।

अब सूतजी कहते हैं कि ऋषियों ब्रह्मा की बनाई हुई सृष्टि के प्रत्येक जीवरूप में (स्थावरजड़, जंगम-चलता-फिरता) गुरुदेव की पावन छवि निहारता हुआ उनके चरणों में प्रणाम करता हूं। ६४

परात्परतरं ध्येयं नित्यमानंदकारकं।
हृदयाकाशमध्यस्थं शुद्धस्फटिकसंनिभं ।।६५।।

कहने का भाव यह है कि हम प्रत्येक जीव के हृदय में निवास करने वाले शिवस्वरूप का हम ध्यान करते हैं जो जीव के हृदयमध्य भाग में शुद्ध विशुद्ध स्फटिक मणि की भांति प्रकाशित हो रहे हैं अर्थात चैतन्य स्वरूप

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है और छोटे-बड़े जीव सबमें वही है, चींटी से लेकर हाथी तक के हृदय मध्य में वही है। ६५

अगोचरं तथा गम्यं रूपनामादिवर्जितं।

निःशब्दं तु विजानीयात्स्वभावं ब्रह्म पार्वति ॥६६॥

सूतजी कहते हैं कि महर्षियों इस प्रकार गुरु महिमा का विशद उल्लेख करते हुए कहते हैं कि जो गुरुस्वरूप परब्रह्म है यद्यपि अगोचर है, निर्गुण, निराकार शब्दों में नहीं कहा जा सकता है, जिसकी ये सारी गुणवत्ता है, ऐसा निर्गुण परमब्रह्म गुरु स्वाभाव कारण से अनुभवित किया जा सकता है। ६६

अंगुष्ठमात्रं पुरुषं ध्यायतश्चिन्मयं हृदि।

तत्र स्फुरति यो भावः श्रणु तं कथायाम्यहं ॥६७॥

सूतजी कहते हैं कि महर्षियो, शिवजी कहते है देवि ! जो जीवात्मा हृदय में प्रविष्ट सत स्वरूप गुरु का जो कि अंगुष्ठभाव रूप में है उनका जो भी ध्यान करता है उसको जो आनन्द सुख मिलता है उसे सुनो। ६७

स्वयं सर्वमयो भूत्वा स्थातव्यं यत्रकुत्रचित्।

कीटभ्रमरवत्तत्र ध्यानं भवति तादृशम् ॥६८॥

जो इस प्रकार अंगुष्ठ स्वरूप सततत्व का ध्यान करता है वह स्वयं सर्वरूप हो जाता है उसे इस बात का बोध हो जाता है कि जो तत्व मुझको प्रकाशित है वही प्रत्येक जड़ चेतन रूप में है। ६८

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यस्यावलोकनादेव सर्वसंगविवर्जितः।

एकाकी निस्पृहः शांतः स्थातव्यं तत्प्रसादतः ॥६९॥

इस प्रकार वह जीवात्मा अपने प्रकाशित परमतत्व मे डूबा रहता है न कोई उसका मित्र रह जाता है, न शत्रु, क्योंकि सृष्टि शरीर में नहीं अपितु तत्व में निर्दिष्ट हो जाती है। ६९

सर्वज्ञोऽयमिति प्राहुर्देही सर्वमयो बुधः।

सदानंदः सदा शांतो रमते यत्रकुत्रचित् ॥७०॥

सूतजी कहते हैं कि ऋषियों वह प्रकाशित जीवात्मा सर्वज्ञ हो जाता है सर्वभूतमय हो जाता है सबमे आपने आप को ही देखता हुआ आनन्दित रमण करता रहता है कोई समस्या नहीं होती। ७०

उपदेशो मया देवि गुरुमार्गेण दर्शितः।

गुरुभक्तिस्तथा ध्यानं सफलं तव कीर्तितं ॥७१॥

इस प्रकार महर्षियों शंकरजी ने कहा कि मेरे द्वारा दिया गया, किया गया यह पावन उपदेश गुरुमार्ग ही प्रदर्शित करता है और संसार में कीर्ति इसी की होती है जो गुरु में भक्ति का भाव रखता है और उन्ही का ध्यान करता रहता है इसलिए उनकी शरण मे ही रहना चाहिए। ७१

अनेन तु भवेत्कार्यं यद्वदामि महाशये।

लोकोपकारकं देवि लौकिकं तु न भावयेत् ॥७२॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूतजी गुरुगीता के वर्णन विस्तार क्रम में अब ये समझाने का प्रयास करते हैं कि वैसे बहुत सारे कार्य बताए गए हैं महापुरुषों के द्वारा, किन्तु वे लौकिक मार्ग लोकहित मे नहीं है अतः गुरु सानिध्य ही बड़ा सानिध्य है। ७२

लौकिकाः कर्मतो यान्ति ज्ञानहीना भवार्णवे।
ज्ञानेन भावयेत्सर्वं कर्म निष्कर्म सांप्रतं ॥७३॥

सूतजी कहते हैं कि ज्ञानहीन लौकिक कर्म चाहे जितने कर लो, संसार सागर से मुक्ति उनके द्वारा नहीं प्राप्त कर सकते है, और जब गुरु ज्ञान से युक्त कर्म जीवात्मा करता है तो उसे हर मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है। ७३

इदं तु भक्तिभावेन पठ्यते श्रूयते यदि।
लिखित्वा यत्प्रदातव्यं तत्सर्वं सफलं भवेत् ॥७४॥

और इस प्रकार गुरुगीता का मर्म प्रकाशित करते हुए बताते हैं कि हे शौनकादि ऋषियों जो भी इस गुरुगीता का पाठ श्रद्धा भक्ति के साथ करता है, सुनता है, पढ़ता है, लिखता है वह सर्वत्र विजय प्राप्त करता है। ७४

गुरुगीताक्षरैकं तु यंत्रराजमिमं जपेत्।
अन्ये च विविधा मंत्राः कलां नार्हन्ति षोडशीं ॥७५॥

इसलिए महर्षियों ! जो भी गुरुगीता के एक भी अक्षर को यंत्रराज समझकर जपता है, उसे अन्य मन्त्र इत्यादि सोलह कलाओं से भी कहीं ज्यादा लाभ एकाक्षर यंत्रराज के जप से ही प्राप्त होता है। ७५

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुगीतात्मक देवि शुद्धं तत्वं मयोदितं।
भवव्याधिविनाशार्थं स्वयमेव सदा जपेत् ॥७६॥

भोलेनाथ कहते हैं कि प्रिये ! गुरुगीता रूप मे यह शुद्ध विशुद्ध तत्व मेरे द्वारा ही प्रकटित हुआ है जो भी इसका जप, ध्यान, पाठ करता है उसे भवबाधा नहीं भोगनी पड़ती है। ७६

अनंतफलमाप्नोति गुरुगीताजपेन तु।
सर्वपापसमूहघ्नं सर्व दारिद्र्यनाशनं ॥७७॥

गुरुगीता के फल प्रभाव का.वर्णन करते हुए बताते हैं कि जो भी गुरुगीता का पाठ करता है वह अनन्त फल प्राप्त करता है, सारे पाप नष्ट हो जाते हैं और सारे दरिद्र समाप्त हो जाते हैं अर्थात जीवन वैभवपूर्ण बन जाता है। ७७

कालमृत्युभयहरं सर्वसंकटनाशनं।
यक्षराक्षसभूतानां चोरव्याघ्रभयापहं ॥७८॥

इस गुरुगीता के पाठ से अकाल मृत्यु का भय, सारे संकट समाप्त हो जाते हैं यक्ष, राक्षस, भूत-प्रेत, चोर, हिंसक पशुओं का भय भी समाप्त हो जाता है अर्थात कोई बाधा नहीं होती। ७८

महाव्याधिहरं चैवं विभूतिसिद्धिदं भवेत्।
अथवा मोहनं वश्यं स्वयमेव जपेत्सदा ॥७९॥

यहाँ तक कि महाव्याधि की बाधा भी दूर हो जाती है सारी विभूतियां

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिद्धि को प्राप्त होती हैं इस गुरुगीता के जप के प्रभाव से सबको अपने वश मे किया जाता है। ७९

कुशैर्वा दूर्वया देवि आसने शुभ्रकंबले।
उपविश्य ततो देवि जपेदेकाग्रमानसः ॥८०॥

सूतजी महर्षियों से कहते हैं कि शिवजी पार्वती से कहे कि देवि ! कुशा और दूर्ब के आसन पर बैठकर जो भक्तिभाव के साथ श्रद्धा युक्त होकर भजता है, उसको सब कुछ प्राप्त होता है। ८०

शुक्लासने वैः शान्त्यर्थं वश्ये रक्तासनं प्रिये।
अभिचारे कृष्णवर्णं पीतवर्णं धनागमे ॥८१॥

सूतजी कहते हैं कि ऋषियो इस गुरुगीता का पाठ जो शुक्लासन पर बैठ कर करता है उसे शान्ति मिलती है, रक्तासन पर बैठकर जो करता है उसे सारा संसार पूजता है, अर्थात सब उसी के वश में हो जाते हैं कृष्णासन से अभिचार, पीतासन से धनागम की प्राप्ति होती है। ८१

उत्तरे शांतिजाप्यं स्यात् वश्ये पूर्व मुखोदितं।
दक्षिणे मारणं प्रोक्तं स्तंभने पाश्चिम मुखं ॥८२॥

अब कहने का भाव ये है कि शांति की प्राप्ति के लिये शुक्लासन पर उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठना चाहिए, सबको अपने अनुकूल करने के लिये रक्तासन पर पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठना चाहिए, शत्रु को मारने के लिये दक्षिण की ओर मुख करके, और स्तम्भन प्रधान के लिये पश्चिम दिशा की ओर मुख करके पाठ करना चाहिए, ऐसा कहा गया है। ८२

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मोहनं सर्वभूतानां बंधमोक्षकरं भवेत्।
देवि भूयः प्रियकरं राजानं वश्यमानयेत् ॥८३॥

हे महर्षियों ! हे गिरिनन्दिनि ! सुनो ये गुरुगीता का पाठ प्रत्येक जीव को विमोहित करके पाठकर्ता के अनुकूल करता है और इतना ही नहीं यह मोक्ष की प्राप्ति भी करा देता है और राजाओं को भी वशीभूत कर देता है इसलिए श्रद्धायुक्त होकर पाठ करना चाहिए। ८३

मुखस्तंभकरं नृणां गुणानांच विवर्धनं।
दुष्कर्मनाशनं चैव सुकर्म सिद्धिदं भवेत् ॥८४॥

इस गुरुगीता के पाठ के प्रभाव से कर्ता के मुख पर दिव्यतेज प्राप्त होता है गुणों की वृद्धि होती है, सारे दुष्कर्म नष्ट हो जाते हैं और सतकर्म पथ पर जीव दौड़ पड़ता है। ८४

सर्व शांतिकरं नित्यं वंध्यापुत्र फलप्रदं।
अवैधव्यकरं स्त्रीणां सौभाग्यदायकं परं ॥८५॥

यह दिव्य गीता पाठ हर तरह की सुख शान्ति प्रदान करता है यहाँ तक कि बन्ध्या स्त्री को पुत्रवती करता है, और स्त्रियां अगर पाठ करती हैं कभी विधवा नहीं होती। ८५

आयुरारोग्यमैश्वर्यं पुत्रपौत्रविवर्धनं।
निष्कामस्तु त्रिवारं वा जपन्मोक्षमवाप्नुयात् ॥८६॥

सूतजी कहते हैं कि महर्षियो इस गुरुगीता पाठ से जीवात्मा अपने जीवन

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में अखण्ड आयु, आरोग्यता, ऐश्वर्य तो प्राप्त करता है साथ ही उसका कुल, उसका परिवार, पुत्र, पौत्र, धन धान्य से पूर्ण होता है और साथ ही मोक्ष की प्राप्ति करता है। ८६

अवैधव्यं सकामा तु लभते चान्यजन्मनि।
सर्वदुःखभयं विघ्नं नाशयेत तापहारकं ॥८७॥

महिमा का विशद वर्णन क्रम में अब सूतजी कहते हैं कि इस गीतापाठ से सारी मनोकामना पूर्ण हो जाती है, कार्य में कोई रूकावट नहीं आती है और मानो कि दूसरा जन्म मिलता भी है तो जीवन में कोई दुख नहीं होता, तीनों तापों का निवारण हो चुका रहता है। ८७

सर्वबाधाप्रशमनं धर्मार्थकाममोक्षदं।
यं यं चिंतयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितं ॥८८॥

यह गुरुगीता पाठ जो करता है उसकी सारी बाधा दूर हो जाती है, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पुरुषार्थ की सहजता मे प्राप्ति होती है और वह जिस जिस क्षेत्र में बढ़ता है उसे पाठ के प्रभाव से सफलता प्राप्त होती है इसलिए गुरुगीता से अधिक कुछ भी नहीं है। ८८

कामधेनुः कामितस्य कल्पितस्य च कल्पदः।
चिन्तामणिश्चिंतितस्य सर्वमंगलकारकं ॥८९॥

सूतजी कहते हैं कि कामधेनुः कामना पूर्ण करती है, कल्पवृक्ष स्वर्ग सम्पत्ति देता है, चिंतामणि हर प्रकार की बाधा चिन्ता दूर करता हुआ हर प्रकार का मंगल शुभ फल प्रदान करता है। ८९

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जाप्यं शाक्तैश्च सौरैश्च गाणपत्यैश्च वैष्णवैः।
शैवस्य सिद्धिदं देवि सत्यं न संशयः ॥९०॥

सूतजी कहते हैं जो व्यक्ति की उपासना करते हैं वो शौर्य की प्राप्ति करते है, जो गणेश की आराधना करते हैं उन्हें विष्णु की प्राप्ति होती हैं किन्तु जो शिव स्वरूप गुरु की पूजा, वन्दना, स्तवन करते है उनको सर्वसिद्धि की प्राप्ति होती है, इसमें कोई सन्देह नहीं है। ९०

संसारमूलनाशार्थं भवपाशनिवृत्तये ।
गुरुगीता भवेत् स्नानं तत्वज्ञः कुरुते सदा ॥९१॥

इसलिए जो वास्तव में अपने को तत्वज्ञानी समझने वाले बुद्धिशील प्राणी हो, उनको हमेशा संसार की समस्त बाधाओं से निवृत्ति के लिये संसार की माया बन्धन स्थिति से मुक्ति पाने की इच्छा से प्रतिदिन स्नान, ध्यान, गुरुदेव का पूजन करके यह गीता पाठ करना चाहिए। ९१

शयनस्थो ह्यासनस्थो वा गच्छंस्तिष्ठंस्तथापि वा ।
अश्वारूदो गंजारूढ़ः सुप्तो वा जागृतोऽपि वा ॥९२॥

इसलिए महर्षियो ये जो दिव्य गीता पाठ है, इसका पाठ उठते, बैठते, सोते, जागते, अश्वारुढ़, गजारूढ़, चलते, बैठते, आठों याम यही पाठ करना चाहिए। ९२

शुचिमान्यः सदा ज्ञानी गुरुगीताजपेन तु ।
तस्य दर्शनमात्रेण पुनर्जन्म न विद्यते ॥९३॥

सूतजी कहते हैं जो जीवात्मा गुरु गीता पाठ के सहारे शिव स्वरूप समर्थ सर्वत्र गुरु की दीक्षा से दीक्षित जो नित्य पाठ करने वाला सन्यासी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वीतरागी संत है अगर उसका दर्शन मात्र साधारण लोग पा जाते हैं तो वो आवागमन से मुक्त हो जाते हैं ऐसा गुरु गीता का प्रभाव हैं। ९३

समुद्रस्य यथा तोयं क्षीरं क्षीरे जलं जले ।

भिन्ने कुंभे यथाकाशस्तथात्मा परमात्मनि ।।९४।।

सूतजी कहते हैं कि महर्षियो जैसे समुद्र मे भी जल होता है अन्य सरोवर मे भी जल होता है, घड़े मे भी जल होता है, तो जैसे पात्र बदल रहे हैं (समुद्र, तालाब, सरोबर, घड़ा) किन्तु जल वही रहता है ठीक ऐसे ही गाय, भैंस, बकरी, कुत्ता बिल्ली मनुष्य हाथी पर्वत पठार नही सबसे शिव स्वरूप गुरु की ही सत्ता होती है बस जीव का स्वरूप अलग दिखता है रहता सबमें वही है। ९४

तथैव ज्ञानी जीवात्मा परब्रह्मणि लीयते ।

ऐक्येन रमते ज्ञानी यत्र तत्र दिवानिशि ।।९५।।

सूतजी कहते हैं कि महर्षियों साधारण जीवत्मा ये मानती है कि हम अलग हैं ब्रह्म अलग है ऐसा वास्तव मे सही नही है जो ज्ञानी है वह सर्वत्र उसी तत्व को निहारता हुआ दिन रात संसार में भ्रमण करता है उसे कोई परेशानी नहीं होती है। अतः यह गीता पाठ तत्व बोध कराने का सहज सरल साधन है। ९५

एवंविधो महामुक्तः सर्वदा वर्तते स्वयं ।

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन भक्तिभावं करोति यः ।।९६।।

इसलिए हे ऋषियों जो भी पूर्ण श्रद्धा, भक्ति विश्वास के साथ इसका पाठ करता है वह संशयहीन, बन्धनहीन होके सर्वदा विचरण करता है और सारा सुख प्राप्त करता है, इसलिए गुरुगीता के सहारे ही जीना चाहिए। ९६

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भुक्तिमुक्तिप्रदस्तेषां जिह्वाग्रे च सरस्वती ।
अनेन प्राणिनः सर्वे गुरुगीताजपेन च ॥९७॥

अब कहते हैं कि ऋषियों पाठ का अनुपम प्रभाव यह है कि कर्ता को भोग मोक्ष दोनों की प्राप्ति होती है उसकी जिह्वा पर सरस्वती विद्यमान हो कर उसकी वाणी को अलंकृत करती है और कहाँ तक महिमा गाऊँ बहुत लोग भोग मोक्ष की प्राप्ति लाभ गीता पाठ के सहारे प्राप्त किए हैं। ९७

सर्वसिद्धिं प्राप्नुवन्ति भुक्तिमुक्ति न संशयः ।
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं निजधर्मो मयोदितः ॥९८॥

भोलेनाथ कहते हैं हे देवि अपने-अपने धर्म आचरण के अनुसार जो भी गुरुगीता का पाठ करता है वह सर्वसिद्धि प्राप्त करता है। भोग मोक्ष की प्राप्ति करता है इसमें तनिक भी संदेह नहीं है। ९८

गुरुगीता समं नास्ति सत्यं सत्यं वरानने ।
गुरुर्देवो गुरुधर्मो गुरुर्निष्ठा परं तपः ॥९९॥

इसलिए महर्षियो मैं सत्य कहता हूँ सत्य कहता हूँ गुरुगीता की तुलना में कुछ और नहीं गुरुदेव ही साक्षात ईश्वर है, गुरुदेव ही धर्म है, गुरु में निष्ठा, समर्पण का भाव ही सबसे बड़ा तप है। ९९

गुरोः परतरं नास्ति नास्ति तत्वं गुरोः परं ।
धन्या माता पिता धन्यो धन्यो वंशः कुलं तथा ॥१००॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूतजी कहते हैं महर्षियो और क्या कहें गुरुदेव के अतिरिक्त कोई और नहीं, गुरुदेव के अलावा कोई दूसरा तत्व नहीं, वही तत्व भी हैं और जो जीवात्मा अपना समर्पण गुरु में करता है, उसके माता पिता, कुल तीनों पवित्र और धन्य-धन्य हो जाते हैं। १००

धन्या च वसुधा देवि गुरुभक्तिः सुदुर्लभा ।

गुरुपुत्रो वरं मूर्खो तस्य सिध्यंति नान्यथा ॥१०१॥

सूतजी कहते हैं कि ऋषियो शिवजी कहते हैं हे भवानी ! धरती का वह भूखण्ड धन्य हो जाता है जहाँ गुरुदेव की भक्ति की जाती है और इसी भक्ति भाव के सहारे कृपा की प्राप्ति कर मूर्ख भी विद्वान हो जाता है। १०१

शुभकर्माणि सर्वाणि दीक्षापि सिद्धिदा भवेत् ।

आकल्पजन्मनां कोटया जपहोमतपः क्रियाः ॥१०२॥

सूतजी कहते हैं कि शौनकादि ऋषियों ! गुरु से दीक्षित हो जाने के बाद सारे शुभ कर्मों की सिद्धि हो जाती हैं, करोड़ो जन्म के पाप नष्ट हो जाते हैं भाव उनके बताए जप, तप और होम इत्यादि पूजन के सहारे ऐसे गुरु की महिमा है। १०२

तत्सर्वं सफलं देवि गुरुसंतोषकारकं ॥१०३॥

सूतजी कहते हैं कि गुरु की महिमा का वर्णन करने के क्रम में अब साफ-साफ शिवजी कह रहे हैं कि हे पार्वती ! ये जो कुछ हम फल की प्राप्ति जीवन में बताए ये सब गुरु को प्रसन्न करने पर ही प्राप्त होते हैं अतः सर्व प्रयत्नेन (हर प्रकार) गुरु को खुश रखना चाहिए। १०३

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब्रह्माविष्णुमहेशादिदेवर्षिपितृकिन्नराः ।
सिद्धचारणयक्षाश्च ऋषयो मुनयो जनाः ॥१०४॥
गुरुसेवाः परं तीर्थमन्यत्तीर्थं निरर्थकं।
सर्वतीर्थाश्च ये देवि सद्गुरोश्चरणांबुजं ॥१०५॥

सूतजी कहते हैं महर्षियो - ब्रह्मा, विष्णु, महेश, नारद, पितृगण, किन्नर, सिद्ध चारण, यक्ष, ऋषिगण, मुनिजन ये सब चाहे जिस पवित्र तीर्थ स्थल पर जा कर तपस्या कर लें, तब तक कोई फल की प्राप्ति इन्हें नहीं मिल सकती जब तक गुरुदेव के कमलवत चरण की सेवा करके उनकी आज्ञा नहीं प्राप्त कर लेते, तब तक उनका किया जप, तप सब व्यर्थ होता है। अतः श्री गुरु के चरण मे ही रहना चाहिए। १०४ १०५

शरीरमिन्द्रियं प्राणाश्चार्थः स्वजनबान्धवाः।
माता पिता कुलं देविं गुरुरेव न संशयः ॥१०६॥

सूतजी कहते हैं कि महर्षियों - चाहिए यह कि शरीर की इन्द्रियों को वश में करके अपने स्वजनों (माता, पिता, भाई, बहन) के साथ गुरु के श्री चरणों का ही ध्यान करना चाहिए। १०६

विद्यातपोबलेनैव मंदभाग्याश्च ये नराः।
गुरुसेवां न कुर्वन्ति सत्यं सत्यं वरानने ॥१०७॥

सूतजी कहते हैं कि महर्षियों जो जीवात्मा (विद्या, तप, बल) से हीन मंदबुद्धि का है, सत्य कहता हूँ वह गुरु की सेवा न करने के कारण से ऐसा हो इसलिए कहा गया है कि "गुरु बिना ज्ञानं न भवति" १०७

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जपेन फलमाप्नोति चानंतं फलमाप्नुयात्।
हीनकर्म त्यजन्सर्वं स्थानानि चाधमानि च ॥१०८॥

जो जीवात्मा गुरुगीता का पाठ करके जप करता है उसी जीवात्मा को गुरु की कृपा से एक पाठ, एक माला जप का एक हजार गुना फल प्राप्त होता है। १०८

उग्रध्यानं कुक्कुटस्थं हीनकर्म फलप्रदं।
गुरुगीतां प्रयाणे वा संग्रामे रिपुसंकटे ॥१०९॥

सूतजी कहते हैं कि हे ऋषिगणों - जो अष्टांग योग के सहारे (यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि) पूरे भाव मे डूब कर विकलता, व्याकुलता की पराकाष्ठा पर पहुँचकर गुरुगीता का पाठ करता है, वह सर्वत्र विजयी होता है, समर भूमि में विजय प्राप्त करता है। १०९

जपते जयमाप्नोति मरणे मुक्तिदायकं।
सर्वकर्म च सर्वत्र गुरुपुत्रस्य सिद्ध्यति ॥११०॥

सूतजी कहते हैं कि जीवात्मा जैसे ही गीता पाठ के सहारे अपनों को समर्पित करके गुरुमन्त्र का जप करता है, विजय को प्राप्त करता है, मरते समय जप के प्रभाव से मुक्ति (मोक्ष) की प्राप्ति करता है, और क्या कहें जैसे गुरु पुत्र के सारे कार्य सम्पन्न होते हैं ऐसे जीवात्मा को सर्वसिद्धि प्राप्त होती है। ११०

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इदं रहस्यं नो वाच्यं तवाग्रे कथितं मया।

सुगोप्यं च प्रयत्नेन येनात्मत्वं प्रयास्यसि ॥१११॥

स्वामिमुख्यगणेशादिवैष्णवानां च पार्वति।

मनसापि न वक्तव्यं मम सान्निध्यकारकं ॥११२॥

सूतजी कहते हैं कि महर्षियों - शिव जगदम्बा पार्वती को ये पावन चरित्र सुनाते हुए कह रहे हैं कि हे देवि ! आज से पूर्व कभी किसी को हमने ये गुप्त रहस्य नहीं बताया था। यहाँ तक कि जितने भी देवता हैं, ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र, यक्ष, कुबेर, ऋषिगण, तपस्वी, मनस्वी गणेश इत्यादि हैं सब मेरी ही शरणागत होकर सर्वसिद्धि फल की प्राप्ति करते है। १११ ११२

अभक्तो वंचको धूर्तः पाखंडी नास्तिको नरः।

मनसापि न वक्तव्या गुरुगीतां कदाचन ॥११३॥

सूतजी का अब कहना है कि हे शौनक ! इस चराचर जगत में जो जीवात्मा भक्तिहीन, ठगधर, धूर्त, पाखण्डी, नास्तिक है, समझो निःसन्देह उसने एक भी क्षण मन से वाणी से न तो गुरुदेव का ध्यान किया है और न ही गुणगान किया है। ११३

अतीवपक्वचित्ताय श्रद्धाभक्तियुताय च।

प्रवक्तव्यमिदं देवि ममात्मासि सदाप्रिये ॥११४॥

अतः महर्षियों गुरुदेव की चरण-शरण में ही रहना श्रेयस्कर है और जो श्रद्धा भक्ति से मुक्त हो कर गुरुगीता के सहारे सिद्धान्तों पर जीता है, वह भूतभावन भोलेनाथ को प्राप्त होता है। ११४

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संसारसागरसमुत्तरणैकमंत्रं ब्रह्मादिदेवमुनिपूजित सिद्धमंत्रम्।
दारिद्र्यदु:खभयशोकविनाशमंत्रं वंदे महाभयहरं गुरुराजमंत्रम् ॥११५॥

अत: अंतिम स्थिति में सूतजी आह्लादित होकर नैमिषारण्य की धरती पर विराजमान ८८००० ऋषियों को समझाते हैं कि महर्षियो – संसार सागर से पार पाने का सहज साधन बस यही है कि ''ब्रह्मा, विष्णु, गणेश, इन्द्र, मुनिजन, ऋषिगण, इत्यादि के द्वारा जो पूजित गुरुराज यन्त्र है इसी को श्रद्धान्वित होकर जपता हुआ, जीवन के दारिद्र, दु:ख को समाप्त कर सुख प्राप्त करे और इस भव सागर से मुक्त हो जाय। अंत: हम उन गुरुदेव के चरणों में प्रणाम करते हैं जिनका सानिध्य मात्र ही संसार का भय दूर करता है। ११५

इति श्रीस्कन्दपुराणे उत्तरखण्डे ईश्वरपार्वतीसंवादे श्रीगुरुगीता समाप्ता॥

॥ श्रीगुरवे नमः । श्रीगुरवे नमः । श्रीगुरवे नमः॥

ऐसा स्कन्द पुराण में गुरुगीता का निरुपण भोलेनाथ पार्वती के संवाद रूप में निरुपित किया गया है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ गुरुस्तवराजः ॥

॥ गुंगुरुभ्यो नमः ॥ श्री गणेशाय नमः। ॥

श्री गुरुस्तवराजः प्रारभ्यते सर्वाऽभीष्टसिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः॥

शरदचंद्र के समान श्वेत कमल जैसे नेत्र किंचित मुस्कराते हुये, शरद के पूर्ण चन्द्रमा के समान उद्दीत्यमान मुख, दिव्य विशाल नेत्र, श्वेत वस्त्र, चंदन को धारण किये हुए, अरूण आभा, वामांग में स्वप्रकाशित मनोहर शक्ति को बिठाए हुए, बर अभय मुद्रा धारण किये, समस्त सुलक्षणों सहित ऐसे सद्‌गुरु को अपने सिर में सहस्त्रदल कमल के मध्य ध्यान करें।

ब्रह्मस्थानसरोजमध्यविलसच्छीतांशु पीठस्थितम्॥
स्फूर्जत्सूर्यरुचिं वराभयकरं कर्पूरकुन्दोज्ज्वलम्॥
श्वेतस्त्रग्वसनानुलेपनयुतं विद्युद्रुचा कान्तया॥
संश्लिष्टार्द्धतनुं प्रसन्नवदनं वन्दे गुरुं सादरम्॥१॥

सहस्त्रदल कमल में स्थित चंद्रपीठ में बैठे हुए जाज्वल्य सूर्य के समान प्रकाशित वर अभय मुद्रा धारण किये हुए, कर्पूर कुन्द के समान आभा, श्वेत पुष्प माला धारण श्वेत वस्त्र और चन्दन लेपन-बिजली के समान कांति वाली मातृ शक्ति के साथ सद्‌गुरु की आदर सहित वन्दना करता हूँ॥१॥

मोहध्वान्तमदान्धताग्रहवतां चक्षुंषिचोन्मीलयन्॥
यश्चक्ररुचिराणि तानि दयया ज्ञानाञ्जनाभ्यञ्जनैः॥
व्याप्तं यन्महसा जगत्त्रयमिदं तत्त्वबोधोदये॥
तं वन्दे शिवरूपिणं निजगुरुं सर्वार्थसिद्धिप्रदम्॥२॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मद मोहरूप अंधकार से ग्रसित मनुष्यों के नेत्रों को अपनी इच्छा से दया करके ज्ञान अंजन से खोलकर जिसने दिव्य अन्तर्चक्षु देकर रुचिर बना दिया है उनकी तेजोमयी कान्ति प्रभा तीनों लोक (तल, अतल, तलातल) में व्याप्त हो रही है। तत्त्व का ज्ञान बोध कराने वाले, समस्त सिद्धियों के प्रदाता शिव स्वरूप अपने सद्गुरू की वंदना करता हूँ।।२।।

मातंगी भुवनेश्वरी च बगला धूमावती भैरवी।।
तारा छिन्नशिरोधरा भगवती श्यामा रमा सुन्दरी।।
दातुं न प्रभवन्ति वाञ्छितफलं यस्य प्रसादं विना।।
तं वन्दे शिवरूपिणं निजगुरुं सर्वार्थ सिद्धिप्रदम्।।३।।

मातंगी, भुवनेश्वरी, बगला, धूमावती, भैरवी, तारा, छिन्नमस्ता, भगवती काली, लक्ष्मी त्रिभुवन सुन्दरी, जिस गुरु के प्रसन्न हुये बिना इच्छित फल नहीं दे सकती ऐसे शिव स्वरूप सर्व सिद्धि प्रदायक अपने सदुरु की वंदना करता हूँ।।३।।

काशीद्वारवती प्रयाग मथुरा-ऽयोध्या गयाऽवन्तिका।।
माया पुष्कर-काञ्चिकोत्कलगिरिः श्री शैलविन्ध्यादयः।।
नैते तारयितुं भवन्ति कुशला यस्य प्रसादं विना।।
तं वन्दे शिवरूपिणं निजगुरुं सर्वार्थसिद्धिप्रदम्।।४।।

काशी, द्वारवती, प्रयाग, मथुरा, अयोध्या, गया, अवंतिका (उज्जैन), माया, पुष्कर, कांची (शिव कांची) उत्कृष्ट उड़ीसा श्रीशैल विंध्याचल ये सभी शिव समान गुरु की कृपा के बिना तरन तारण करने में समर्थ

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नहीं है। ऐसे शिव स्वरूप सद्गुरु सर्व सिद्धि देने वाले अपने गुरु की वंदना करता हूँ।।४।।

रेवासिन्धुसरस्वती त्रिपथगाः सूर्यात्मजा कौशिकी।।
गङ्गासागरसङ्गमोऽद्रितनया लौहित्यशोणादयः।।
नालं प्रोक्तफलप्रदानविषये यस्य प्रसादं विना।।
तं वन्दे शिवरूपिणं निजगुरुं सर्वार्थसिद्धिप्रदम्।।५।।

रेवा, सिन्धु, सरस्वती, गंगा-जमुना, कौशिकी, गंगासागर, संगमोदितनया (लोहित्य) शोणभद्रादिक ये सभी जिनकी कृपा के बिना इच्छित फल प्रदान करने में समर्थ नहीं हैं। ऐसे शिव-स्वरूप समस्त सिद्धियों के प्रदाता अपने सद्गुरु की वंदना करता हूँ।।५।।

सत्कीर्ति विमलं यशः सुकविता पाण्डित्यमारोग्यता।।
वादे वाक्पटुता कुले चतुरता गाम्भीर्यमक्षोभ्यता।।
प्रागल्भ्यं प्रभुता गुणे निपुणता यस्य प्रसादाद् भवेत्।।
तं वन्दे शिवरूपिणं निजगुरूं सर्वार्थसिद्धिपदम्।।६।।

सुन्दर कीर्ति, विमल यश, अच्छी कविता, विद्वता, निरोगता, शास्त्रार्थ में निपुणता, कुल में चतुरता, समर्थता धैर्यशीलता, गम्भीरता, तेजस्विता ऐश्वर्यवान, गुणों में निपुणता ये समस्त गुण उन गुरुवर की करुण कृपा से ही परिपूर्णता पाते हैं जो समस्त सिद्धियों को देने वाले हैं ऐसे शिव स्वरूप अपने सद्गुरु की वंदना करता हूँ।।६।।

लोकेशो हरिरम्बिका स्मरहरो मातापिताऽभ्यागता।।
आचार्य्यः कुलपूजितो यतिवरो वृद्धस्तथा भिक्षुकः।।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नैते यस्य तुलां ब्रजन्ति कलया कारुण्यवारांनिधे॥
स्तं वन्दे शिवरूपिणं निजगुरुं सर्वार्थसिद्धिप्रम्॥७॥

इंद्रादिक, विष्णुदेव, महादेव, अम्बिका माता-पिता, अतिथि, अभ्यागत, आचार्य कुलगुरु, श्रेष्ठ यतीजती, विद्या वृन्द, तपोनिष्ठ भिक्षुक इन सबकी कलायें, उन सद्गुरु करुणा सागर की अनुग्रहीत किंचित कृपा की तुलना में नगण्य हैं। ऐसे शिव स्वरूप समर्थ सद्गुरु समस्त सिद्धियों के प्रदाता की वन्दना करता हूँ॥७॥

ध्यानं दैवतपूजनं गुरुतपोदानाग्निहोत्रादयः॥
पाठो होमनिषेवणं पितृमखाह्यभ्यागताच्चर्या वलिः॥
एते व्यर्थफलां भवन्ति सततं यस्य प्रसादं विना॥
तं वन्दे शिवरूपिणं निजगुरुं सर्वार्थसिद्धिप्रदम्॥८॥

ध्यान, देव पूजन, महान तप, दान, श्राद्ध, हवन आदिक कर्म व्रतोपवास पाठ अभ्यागत अतिथि का विधिवत पूजागत सत्कर्म जिनकी कृपा के बिना सुफलदायी नहीं होते ऐसे शिव स्वरूप अपने समर्थ सद्गुरु की मैं वन्दना करता हूँ॥८॥

पूर्वाशाभिमुखः कृताञ्जलिपुटः श्लोकाष्टकं यः पठेत्॥
पौरश्चर्यविधिं विनाऽपि लभते मन्त्रस्य सिद्धि पराम्॥
नो विघ्नैः परिभूयते प्रतिदिनं प्राप्नोति पूजाफलम्॥
देहान्ते परमं पदं निविशते यद्योगिनां दुर्लभम्॥९॥

पूर्व दिशा की ओर आमुख होकर प्रातः काल विनम्र श्रद्धावनत होकर युगल कर-वंदना से भाव विभोर होते हुए उपरोक्त आठों पदों (श्लोकों

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

को) विह्वल होकर अन्तर तल हृदय स्थली से सस्वर मुक्त कण्ठ से गान करें तो वे सदपात्र बिना पुरूश्चरण किये ही पराम्बा की कृपा पाकर कृतकृत्य हो जाते हैं तथा निर्विघ्नता पूर्वक नित्य ही आराधना पूजा का मंगलदायी सुफल पाते हैं और अन्त समय परम पद मोक्ष को प्राप्त होते हैं जो पद योगियों के लिये भी दुर्लभ हैं।।९।।

इति श्री वामकेश्वरतन्त्रे पार्वतीशिवसंवादे श्रीगुरुस्तवराजः सम्पूर्णः।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरु साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शित येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।
ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं।
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्।।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतम्।
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरूं तं नमामि।।
जिनकी कृपा कोर पाने से-चितचेतन होते उत्कर्ष।
आरत शरणागत, चरणों में ले लो मेरे सद्गुरूदेव समर्थ।।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ गुर्वष्टकम् ॥

गुरुर्वृत्य अनुरोधनं, न किंचिदपि तस्य दुर्लभम्।

शरीरं सुरूपं तथा वा कलत्रं यशश्चारु चित्रं धनं मेरुतुल्यम्।
गुरोरंघ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततःकिं ततःकिं ततःकिं ततःकिम्॥१॥

सुरूपवान पुष्ट शरीर हो, उसी प्रकार की सुंदर स्त्री हो, वैभव हो अर्थात् विचित्र वैभव सुमेरु राशि तुल्य धन ये सब कुछ भी हो यदि श्री सद्गुरु के चरण कमल में मन नहीं लगा तो उससे आगे और है ही क्या। अर्थात् यदि गुरु कृपा है तो ये सभी सार्थक है वर्ना निरर्थक है, निरर्थक है, निरर्थक है, निरर्थक है॥१॥

कलत्रं धनं पुत्रपौत्रादि सर्वं गृहं बान्धवाः सर्वमेतद्धि जातम्॥
गुरोरंघ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं, ततःकिं ततःकिं ततःकिं ततःकिम्॥२॥

स्त्री, पुत्र, पौत्र, घर, मकान, भाई, बंधु सभी उपलब्ध हुये। ये तभी सार्थक हैं, जब गुरु चरण कमल में ध्यान लगा रहे। नहीं ये सभी निरर्थक, निरर्थक, निरर्थक, निरर्थक। अर्थात्-गुरु चरण ध्यान के अलावा कुछ है ही नहीं॥२॥

षडङ्गादिवेदो मुखे शास्त्रविद्या कवित्वादि गद्यं सुपद्यं करोति।
गुरोरंघ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं, ततःकिं ततःकिं ततःकिं ततःकिम्॥३॥

छै अंगों सहित वेदाध्ययन सुख, शास्त्र विद्या, गद्य-पद्य मय कवित्व करना ये सभी गुरु चरण ध्यान के बिना निःस्सार हैं, निःस्सार हैं, निःस्सार हैं, निःस्सार हैं। अतः इन सब आडंबरों से होना जाना कुछ नहीं॥३॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विदेशेषु मान्यः स्वदेशेषु धन्यः सदाचारवृत्तेषु मत्तो न चान्यः।
गुरोरंघ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततःकिं ततःकिं ततःकिं ततःकिम्॥४॥

विदेशों में मान्यता, अपने देश में धन्यवाद के पात्र होना, सदाचार चर्चा में प्रमत्त होना ये सब बिना गुरु चरण कमल के ध्यान के सभी निरर्थक हैं। अर्थात्। शांति दायक नहीं है। नहीं है। नहीं है। नहीं है॥४॥

क्षमामण्डले भूपभूपालवृन्दैः सदा सेवितं यस्य पादारविन्दम्।
गुरोरंघ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततःकिं ततःकिं ततःकिं ततःकिम्॥५॥

पृथ्वी मण्डल पर सभी राजाओं से जिनके चरण कमल सदा सुपूजित हैं ऐसे वैभव से क्या प्रयोजन है, कुछ नहीं। गुरु चरण कमल युगल में मन नहीं लगा तो उससे आगे कुछ भी नहीं। अर्थात् गुरु चरण युग्म का ध्यान सर्वोपरि है, ध्यान सर्वोपरि है, ध्यान सर्वोपरि है, ध्यान सर्वोपरि है॥५॥

यशो मे गतं दिक्षु दानाप्रतापा-ज्जगद्वस्तु सर्वं करे यत्प्रसादात्।
गुरोरंघ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततःकिं ततःकिं ततःकिं ततःकिम्॥६॥

दान के प्रभाव से हमारा यश देश-विदेश में फैल गया हो तथा जिनके प्रसाद से संसार की हर वस्तु मिल गई हो, यदि गुरु चरणों में हमारा मन नहीं लगा तो सब व्यर्थ ही है। सब व्यर्थ ही है। सब व्यर्थ ही है। सब व्यर्थ ही है॥६॥

न भोगे न योगे न वा वाजिराजौ, न कान्तामुखे नैव वित्तेषु चित्तम्।
गुरोरंघ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततःकिं ततःकिं ततःकिं ततःकिम्॥७॥

न भोग, न योग, न हाथी, घोड़े की सवारी न चन्द्र वदनी के मुख और धन इनमें चित्त नहीं हैं ऐसा विराग भी बेमानी है। अर्थात् बिना गुरु चरण कमलों के ध्यान के इससे परे और है ही क्या ? गुरु पद कमलों के ध्यान से ही सार्थकता है, सार्थकता है, सार्थकता है, सार्थकता है॥७॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अरण्ये न वा स्वस्य गेहे न कार्ये न देहे मनो वर्त्तते मे त्वनर्घ्ये।
गुरोरंघ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततःकिं ततःकिं ततःकिं ततःकिम्॥८॥

वीरान जंगल में, किंवा घर में या फिर किसी कार्य में मन नहीं लगता हो। अर्थात् अमूल्य गुरु चरण का ध्यान ही सर्वोपरि है उनके ध्यान के बिना सब व्यर्थ है, ध्यान के बिना सब व्यर्थ है, ध्यान के बिना सब व्यर्थ है। ध्यान के बिना सब व्यर्थ है। आगे और है ही क्या ॥८॥

अनर्घ्याणि रत्नानि मुक्तानि सम्यक्-समालिङ्गिता कामिनी यामिनीषु।
गुरोरंधिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततःकिं ततःकिं ततःकिं ततःकिम्॥९॥

अमूल्य रत्नों का उपयोग जीवन में किया। सुर सुन्दरियों में विषयासक्त हो के रात्रि बिता दी। यदि गुरु चरण कमलों में मन नहीं लगा तो ये सभी निरर्थक हुये। गुरु चरण ध्यान मनन ही सर्वोत्कृष्ट है, सर्वोत्कृष्ट है, सर्वोत्कृष्ट है, सर्वोत्कृष्ट है। इसके आगे और कुछ है ही नहीं॥९॥

गुरोरष्टकं यः पठेतपुण्यदेही यतिर्भूपतिर्ब्रह्मचारी च गेही।
लभेद्वांछितार्थं पदं ब्रह्मसंज्ञ, गुरोरुक्तवाक्ये मनो यस्य लग्नम्॥१०॥

यह जो पुण्यात्मा गुर्वष्टक मन लगा के पढ़े। चाहे वे यति हो या भूपति हो, गृहस्थ हो ब्रह्मचारी हो, वह वांछित ब्रह्मपद को पाता है, यदि वह गुरु वाक्य में विश्वास कर उनके अनुसार चलता है॥१०॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य
श्रीमच्छङ्कराचार्य विरचितं गुरोरष्टकं सम्पूर्णम्॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री पीताम्बरा माँ की आरती

जय पीताम्बरधारिणि जय सुखदे वरदे, मातर्जय सुखदे वरदे।
भक्तजनानां क्लेशं भक्तजनानां क्लेशं सततं दूर करे॥
जय देवि जय देवि ॥१॥

असुरैः पीड़ितदेवास्तव शरणं प्राप्ताः, मातस्तवशरणं प्राप्ताः।
धृत्वा कौर्मशरीरं धृत्वा कौर्मशरीरं दूरीकृतदुःखम्॥
जय देवि जय देवि ॥२॥

मुनिजनवन्दितचरणे जय विमले बगले, मातर्जय विमले बगले।
संसारार्णवभीतिं संसारार्णवभीतिं नित्यं शान्तकरे॥
जय देवि जय देवि ॥३॥

नारदसनकमुनीन्द्रैर्ध्यातं पदकमलं मातर्ध्यातं पदकमलं।
हरिहरद्रुहिणसुरेन्द्रैः हरिहरद्रुहिणसुरेन्द्रैः सेवितपदयुगलम्॥
जय देवि जय देवि ॥४॥

काञ्चनपीठनिविष्टे मुद्गरपाशयुते, मातर्मुद्गरपाशयुते।
जिह्वावज्रसुशोभित जिह्वावज्रसुशोभित पीतांशुकलसिते॥
जय देवि जय देवि ॥५॥

विन्दुत्रिकोणषडस्त्रैरष्टदलोपरिते, मातरष्टदलोपरिते।
षोडशदलगतपीठं षोडशदलगतपीठं भूपुरवृत्तयुतम्॥
जय देवि जय देवि ॥६॥

इत्थं साधकवृन्दश्चिन्तयते रूपं मातश्चिन्तयतेरूपं।
शत्रुविनाशकबीजं शत्रुविनाशकबीजं धृत्वा हृत्कमले॥
जय देवि जय देवि ॥७॥

अणिमादिकबहुसिद्धि लभते सौख्ययुतां, मातर्लभते सौख्ययुतां।
भोगान्भुक्त्वा सर्वान्, भोगान्भुक्त्वा सर्वान्, गच्छतिविष्णुपदम्॥
जय देवि जय देवि ॥८॥

पूजाकाले कोऽपि आर्तिक्यं पठते, मातरार्तिक्यं पठते।
धनधान्यादिसमृद्धो धनधान्यादिसमृद्धः सान्निध्यं लभते॥
जय देवि जय देवि ॥९॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुष्पाञ्जलि एवं प्रदक्षिणादि

हाथ में पुष्प लेकर निम्न मन्त्रों को पढ़ें-

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणिप्प्रथमान्यासन्।
ते हनाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने। नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे।
स मे कामान् कामकामाय मह्यं। कामेश्वरी वैश्रवणो ददातु।
कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः। ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं
स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठयं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्त-
पर्यायी स्यात्सार्वभौमः सर्वायुष आन्तादापरार्धात्। पृथिव्यै समुद्र-
पर्यन्ताया एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतःपरिवेष्टातारो
मरुत्तभ्यावसन्गृहे, आविक्षितस्य कामप्रे विश्वेदेवाः सभासद् इति।
ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतो वाहुरुतविश्वतस्पात्।
सम्बाहुभ्यांधमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देवएकः। ॐकुलकुमार्ये
विद्महे पीताम्बरायै धीमहि तन्नो बगला प्रचोदयात्। नानाविधानि
पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च। पुष्पांजलिं मया दतं गृहाण बगलामुखि।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पीताम्बरा माँ की आरती का हिन्दी रूपान्तर

हे पीत वस्त्र धारण करने वाली माँ आपकी जय हो। हे सुखदात्री माँ हे वरदात्री माँ आपकी जय हो। माँ अपने भक्तो का दुख सदा के लिए दूर कर दो। हे देवि आपकी जय हो, हे देंवि आपकी जय हो।।१।।

दैत्यों से पीड़ित देवतागण जब आपकी शरण स्वीकारे तो आपने ही कौर्मशरीर धारण कर उनका दुख दूर किया है। हे देवि आपकी जय हो, हे देवि आपकी जय हो ।।२।।

हे विमलाभी हे बगला माँ हे मुनिगनर्वान्दत चरणों वाली वाली माँ संसारार्णव का भय कृपा कर शांत करो माँ। हे देवि आपकी जय हो, हे देवि आपकी जय हो ।।३।।

हे माँ आपका चरण कमल सनकमुनी भी स्मरण योग्य तथा ब्रह्मा, विष्णु, महेश और इन्द्र द्वारा भी सेव्य है। हे देवि आपकी जय हो, हे देवि आपकी जय हो ।।४।।

माँ आप स्वर्ण सिंहासन पर विराजती है और मुद्‌गर पाश धारण करती है। शत्रु जिव्हा वज्र से शोभायमान पीतां शुक मुक्ता। हे देवि आपकी जय हो, हे देवि आपकी जय हो ।।५।।

बिन्दु त्रिकोण स्वरूपा षड़स्त्र द्वारा संरक्षित अष्ठदल से धिरी हुई षोडषदल वाले पीठ पर सुशोभित बल से युक्त माँ आपकी जय हो हे देवी आपकी जय हो ।।६।।

हे माँ आपके साधकों के द्वारा इसी स्वरूप का ही चिंतन किया जाता है माँ आप शत्रु विनाशकवीज हृदय कमल में धारण करती है हे देवि आपकी जय हो, हे देवि आपकी जय हो ।।७।।

हे माँ आपकी ही कृपा से अणिमादिक अनेकों सिद्धि भी प्राप्त होती हैं और साथ में सुखशक्ति भी प्राप्त होती है और सारे सुख प्राप्त करके साधक विष्णुलोक प्राप्त करता है। अत: हे देवि आपकी जय हो, हे देवि आपकी जय हो ।।८।।

हे माँ पूजा काल में कोई भी यदि आपकी आरती का पाठ करता है तो वो धन धान्यादि से युक्त हो आपका सान्निध्य प्राप्त करता है इसलिए माँ आपकी जय हो आपकी जय हो ।।९।।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ देवरूपराधक्षमापनस्तोत्रम्

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम्॥१॥

विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत्।
तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति॥२॥

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥३॥

जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूवस्तव मवा।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुपे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥४॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परित्यक्ता देवा विविधविधमेवाकुलतया
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं तमि शरणाम् ॥५॥

श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ॥६॥

चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ॥७॥

न मोक्षस्याकाङ्क्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः॥८॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः
किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव ॥९॥

आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं
करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः
क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥१०॥

जगदम्ब विचित्रमत्र किं
परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि।
अपराधपरम्परापरं
न हि माता समुपेक्षते सुतम् ॥११॥

मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु ॥१२॥

इति श्रीशङ्कराचार्यविरचितं
देव्यधराज्यक्षमापनस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्षमापन स्तोत्र का हिन्दी अनुवाद

हे, माँ! मैं न मन्त्र जानता हूँ, न यन्त्र, अहो! मुझे स्तुतिका भी ज्ञान नहीं है। न आवाहन का पता है, न ध्यानका। स्तोत्र और कथा की भी जानकारी नहीं है। न तो तुम्हारी मुद्राएँ जानता हूँ और न मुझे व्याकुल होकर विलाप करना ही आता है, परंतु एक बात जानता हूँ, केवल तुम्हारा अनुसरण-तुम्हारे पीछे चलना। जो कि सब क्लेशों को-समस्त दुःख विपत्तियों को हर लेनेवाला है ।।१।।

सबका उद्धार करने वाली कल्याणमयी माता। मैं पूजाकी विधि नहीं जानता, मेरे पास धनका भी अभाव है, मैं स्वभाव से भी आलसी हूँ तथा मुझसे ठीक-ठीक पूजा का सम्पादन हो भी नहीं सकता, इन सब कारणों से तुम्हारे चरणों की सेवा में त्रुटि हो गयी हो, उसे क्षमा करना। क्योंकि कुपुत्र का होना सम्भव है, किंतु कहीं भी कुमाता नहीं होती।।२।।

माँ! इस पृथ्वीपर तुम्हारे सीधे-सादे पुत्र तो बहुत से हैं, किंतु उन सबमें मैं ही अत्यन्त चपल तुम्हारा बालक हूँ, मेरे-जैसा चंचल कोई विरला ही होगा। शिवो मेरा जो यह त्याग हुआ है, यह तुम्हारे लिये कदापि उचित नहीं है, क्योंकि संसार में कुपुत्र का होना सम्भव है, किंतु कहीं भी कुमाता नहीं होती।।३।।

जगदम्बा ! मातः ! मैंने तुम्हारे चरणों की सेवा कभी नहीं की देवि। तुम्हें अधिक धन भी समर्पित नहीं किया, तथापि मुझ-जैसे अधारण को तुम अनुपम स्नेह करती हो, इसका कारण यही है कि संसार में कुपुत्र पैदा हो सकता है किन्तु कहीं भी कुमाता नहीं होती ।।४।।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गणेशजी को जन्म देने वाली माता पार्वती। (अन्य देवताओं को आराधना करते समय) मुझे नाना प्रकार की सेवाओं में लगा रहना पड़ता था, इसलिये पचासी वर्षों से अधिक अवस्था बीत जाने पर मैंने देवताओं को छोड़ दिया है। अब उनकी सेवा-पूजा मुझ से नहीं हो पाती, अतएव उनसे कुछ भी सहायता मिलने की आशा नहीं है। इस समय यदि तुम्हारी कृपा नहीं होगी तो मैं अवलम्बरहित होकर किसकी शरण में जाऊँगा ।।५।।

माता अपर्णा। तुम्हारे मन्त्र का एक अक्षर भी कान में पड़ जाये तो उसका फल यह होता है कि मूर्ख चाण्डाल भी मधुपाकं के समान्य मधुर वाणी का उच्चारण करने वाला उत्तम वक्ता हो जाता है, दीन मनुष्य भी करोड़ों स्वर्ण मुद्राओं से सम्पन्न हो चिरकाल तक निर्भय विहार करता रहता है। जब मंत्र के अक्षर के श्रवण का ऐसा फल है तो जो लोग विधि पूर्वक जप में लगे रहते हैं उनके जप से प्राप्त होने वालां उत्तम फल कैसा होगा। इसको कौन मनुष्य जान सकता है ।।६।।

भवानी! जो अपने अंगों में चिता की राख-भभूत लपेटे रहते हैं, जिनका विष ही भोजन है, जो दिगम्बरधारी (नग्न रहने वाले) हैं, मस्तक पर जटा और कण्ठ में नागराज वासुकिको हारके रूप में धारण करते हैं तथा जिनके हाथ में कपाल (भिक्षापात्र) शोभा पाता है, ऐसे भूतनाथ पशुपति भी जो एकमात्र 'जगदीश' की पदवी धारण करते हैं, इसका क्या कारण है ? यह महत्त्व उन्हें कैसे मिला, यह केवल तुम्हारे पाणिग्रहण की परिपाटीका फल है, तुम्हारे साथ विवाह होने से ही उनका महत्त्व बढ़ गया ।।७।।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुख में चन्द्रमा की शोभा धारण करने वाली माँ ! मुझे मोक्षकी इच्छा नहीं है, संसार के वैभव की अभिलाषा नहीं है, न विज्ञान की अपेक्षा है, न सुखकी आकांक्षा, अतः तुमसे मेरी यही याचना है कि मेरा जन्म 'मृडानी, रुद्राणी, शिव, शिव, भवानी' - इन नामोंका ज़प करते हुए बीते ॥८॥

माँ श्यामा! नाना प्रकार की पूजन-सामग्रियों से कभी विधिपूर्वक तुम्हारी आराधना मुझसे न हो सकी। सदा कठोर भावका चिन्तन करने वाली मेरी वाणी ने कौन सा अपराध नहीं किया है। फिर भी तुम स्वयं ही प्रयत्न करके मुझ अनाथ पर जो किंचित् कृपादृष्टि रखती हो, माँ! यह तुम्हारे ही योग्य है। तुम्हारी-जैसी दयामयी माता ही मेरे जैसे कुपुत्र को भी आश्रय दे सकती है ॥९॥

माता दुर्गे ! करुणासिन्धु महेश्वरी। मैं विपत्तियों में फँसकर आज जो तुम्हारा स्मरण करता हूँ (पहले कभी नहीं करता रहा) इसे मेरी शठता न मान लेना, क्योंकि भूख प्यास से पीड़ित बालक माता का ही स्मरण करता है।।१०।।

जगदम्ब ! मुझ पर जो तुम्हारी पूर्ण कृपा बनी हुई है, इसमें आश्चर्य की कौन सी बात है, पुत्र अपराध पर अपराध क्यों न करता जाता हो, फिर भी माता उसकी उपेक्षा नहीं करती।।११।।

महादेवि ! मेरे समान कोई पातकी नहीं है और तुम्हारे समान दूसरी कोई पापहारिणी नहीं है, ऐंसा जानकर जो उचित जान पड़े, वह करो माँ ॥१२॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री पीताम्बरा पीठ

ह्लीं

दतिया (म.प्र.)

मूल्य-₹15/-

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal